الجزء ٢٠

اَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ

से	तुम्हारे लिए	और उतारा	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा किया	भला कौन?

السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ مَا كَانَ

न था	बा रौनक़	बाग़ात	उस से	पस उगाए हम ने	पानी	आस्मान

لَكُمْ اَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ ۬ ٦٠

60	कज रवी करते हैं	लोग	वह	बल्कि	अल्लाह के साथ	क्या कोई माबूद	उन के दरख़्त	कि तुम उगाओ	तुम्हारे लिए

اَمَّنْ جَعَلَ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّجَعَلَ خِلٰلَهَآ اَنْهٰرًا وَّجَعَلَ

और (पैदा) किए	नदी नाले	उस के दरमियान	और (जारी) किया	क़रारगाह	ज़मीन	बनाया	भला कौन-किस

لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह के साथ	क्या कोई माबूद	आड़ (हदे फ़ासिल)	दो दर्या	दरमियान	और बनाया	पहाड़ (जमा)	उस के लिए

بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ؕ ٦١ اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ

वह उसे पुकारता है	जब	बेक़रार	क़ुबूल करता है	भला कौन	61	नहीं जानते	उन के अक्सर	बल्कि

وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह के साथ	क्या कोई माबूद	ज़मीन	नाइब (जमा)	और तुम्हें बनाता है	बुराई	और दूर करता है

قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ؕ ٦٢ اَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ

ख़ुश्की	अन्धेरों में	तुम्हें राह दिखाता है	भला कौन	62	नसीहत पकड़ते हैं	जो	थोड़े

وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ؕ

उस की रहमत	पहले	ख़ुशख़बरी देने वाली	हवाएं	चलाता है	और कौन	और समुन्दर

ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ؕ ٦٣ اَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ

पहली बार पैदा करता है मख़्लूक़	भला कौन	63	यह शरीक ठहराते हैं	उस से जो	बरतर है अल्लाह	अल्लाह के साथ	क्या कोई माबूद

ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ

और ज़मीन	आस्मान से	तुम्हें रिज़्क़ देता है	और कौन	फिर वह उसे दोबारा (ज़िन्दा) करेगा

ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ٦٤

64	सच्चे	तुम हो	अगर	अपनी दलील	ले आओ तुम	फ़रमा दें	अल्लाह के साथ	क्या कोई माबूद

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ

ग़ैब	और ज़मीन	आस्मानों में	जो	नहीं जानता	फ़रमा दें

اِلَّا اللّٰهُ ؕ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ٦٥ بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ

उन का इल्म	बल्कि थक कर रह गया	65	वह उठाए जाएंगे	कब	और वह नहीं जानते	सिवाए अल्लाह के

ع ٥ ٨ ١

فِي الْاٰخِرَةِ ۚ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْهَا ۚ بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُوْنَ ٦٦

66	अन्धे	उस से	वह	बल्कि	उस से	शक में	बल्कि वह	आख़िरत (के बारे) में

भला कौन है? जिस ने आस्मान को और ज़मीन को पैदा किया, और तुम्हारे लिए आस्मान से पानी उतारा, फिर हम ने उस से बा रौनक़ बाग़ उगाए, तुम्हारे लिए (मुमकिन) न था कि तुम उन के दरख़्त उगा सको, क्या अल्लाह के साथ कोई (और) माबूद है? बल्कि वह लोग कज रवी करते हैं। (60)
भला कौन है? जिस ने ज़मीन को क़रारगाह बनाया, और उस के दरमियान नदी नाले (जारी किए) और उस के लिए पहाड़ बनाए, और दो दर्याओं के दरमियान हदे फ़ासिल बनाई, क्या अल्लाह के साथ कोई (और) माबूद है? बल्कि उन के अक्सर नहीं जानते। (61)
भला कौन है? जो बेक़रार (की दुआ) क़ुबूल करता है जब वह उसे पुकारता है, और बुराई दूर करता है, और तुम्हें ज़मीन में नाइब बनाता है, क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? थोड़े हैं जो नसीहत पकड़ते हैं। (62)
भला कौन है जो ख़ुश्की (जंगल) और समुन्दर के अन्धेरों में तुम्हें राह दिखाता है? और कौन है जो उस की रहमत (बारिश) से पहले ख़ुशख़बरी देने वाली हवाएं चलाता है? क्या अल्लाह के साथ कोई (और) माबूद है? अल्लाह बरतर है उस से जो यह शरीक ठहराते हैं? (63)
भला कौन है जो मख़्लूक़ को पहली बार पैदा करता है? फिर वह उसे दोबारा ज़िन्दा करेगा, और कौन है जो तुम्हें रिज़्क़ देता है? आस्मान और ज़मीन से, क्या अल्लाह के साथ कोई (और) माबूद है? आप (स) फ़रमा दें कि ले आओ अपनी दलील अगर तुम सच्चे हो। (64)
आप (स) फ़रमा दें, जो (भी) आस्मानों और ज़मीन में है, अल्लाह के सिवा ग़ैब (की बातें) नहीं जानता, और वह नहीं जानते कि वह कब (जी) उठाए जाएंगे? बल्कि आख़िरत के बारे में उन का इल्म थक कर रह गया है। (65)
(कुछ भी नहीं) बल्कि वह उस से शक में हैं, बल्कि वह उस से अन्धे हैं। (66)

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّاٰبَآؤُنَآ اَىِٕنَّا

क्या हम	और हमारे बाप दादा	मिट्टी	हम हो जाएंगे	क्या जब	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहा

لَمُخْرَجُوْنَ ﴿٦٧﴾ لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا

और हमारे बाप दादा	हम	यह-यही	तहक़ीक़ वादा किया गया हम से	67	निकाले जाएंगे अलबत्ता

مِنْ قَبْلُ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾ قُلْ سِيْرُوْا

चलो फिरो तुम	फ़रमा दें	68	अगले	कहानियां	मगर-सिर्फ़	यह	नहीं	इस से क़ब्ल

فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٦٩﴾

69	मुजरिम (जमा)	अन्जाम	हुआ	कैसा	फिर देखो	ज़मीन में

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِىْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿٧٠﴾

70	वह मक्र करते हैं	उस से जो	तंगी में	और आप (स) न हों	उन पर	और तुम ग़म न खाओ

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٧١﴾ قُلْ

फ़रमा दें	71	सच्चे	तुम हो	अगर	वादा	यह	कब	और वह कहते हैं

عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِىْ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٧٢﴾

72	तुम जल्दी करते हो	वह जो-जिस	कुछ	तुम्हारे लिए	क़रीब	हो गया हो	कि	शायद

وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ

उन के अक्सर	और लेकिन	लोगों पर	अलबत्ता फ़ज़्ल वाला	तुम्हारा रब	और बेशक

لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا

और जो	उन के दिल	जो छुपी हुई है	खूब जानता है	तुम्हारा रब	और बेशक	73	शुक्र नहीं करते

يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٤﴾ وَمَا مِنْ غَآئِبَةٍ فِى السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِلَّا فِىْ

में	मगर	और ज़मीन	आस्मानों में	ग़ाइब	कुछ	और नहीं	74	वह ज़ाहिर करते हैं

كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٥﴾ اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَقُصُّ عَلٰى بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ

बनी इस्राईल पर	बयान करता है	क़ुरआन	यह	बेशक	75	किताबे रोशन

اَكْثَرَ الَّذِىْ هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٧٦﴾ وَاِنَّهٗ

और बेशक यह	76	इख़्तिलाफ़ करते हैं	उस में	वह	वह जो	अक्सर

لَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٧﴾ اِنَّ رَبَّكَ

तुम्हारा रब	बेशक	77	ईमान वालों के लिए	और रहमत	अलबत्ता हिदायत

يَقْضِىْ بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهٖ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ﴿٧٨﴾

78	इल्म वाला	ग़ालिब	और वह	अपने हुक्म से	उन के दरमियान	फ़ैसला करता है

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِيْنِ ﴿٧٩﴾

79	वाज़ेह हक़	पर	बेशक तुम	अल्लाह पर	पस भरोसा करो

और काफ़िरों ने कहा क्या जब हम और हमारे बाप दादा मिट्टी हो जाएंगे क्या हम (क़ब्रों से) निकाले जाएंगे? (67)

तहक़ीक़ यही वादा हम से और हमारे बाप दादा से इस से क़ब्ल किया गया था, यह सिर्फ़ अगलों की कहानियां हैं। (68)

आप (स) फ़रमा दें ज़मीन में चलो फिरो, फिर देखो कैसा अन्जाम हुआ मुजरिमों का! (69)

और आप (स) ग़म न खाएं, और आप (स) दिल तंग न हों, उस से जो वह मक्र ओ फ़रेब करते हैं। (70)

और वह कहते हैं यह वादा कब पूरा होगा? अगर तुम सच्चे हो। (71)

आप (स) फ़रमा दें शायद उस (अ़ज़ाब) का कुछ तुम्हारे लिए क़रीब आगया हो जिस की तुम जल्दी करते हो। (72)

और बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता लोगों पर फ़ज़्ल वाला है, लेकिन उन के अक्सर शुक्र नहीं करते। (73)

और बेशक तुम्हारा रब खूब जानता है जो उन के दिलों में छुपी हुई है और जो वह ज़ाहिर करते है। (74)

और कुछ ग़ाइब (पोशीदा) नहीं ज़मीन ओ आस्मान में मगर वह किताबे रोशन में (लिखी हुई) है। (75)

बेशक यह क़ुरआन बनी इस्राईल पर (बनी इस्राईल के सामने) अक्सर वह बातें बयान करता है जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते हैं। (76)

और बेशक यह (क़ुरआन) अलबत्ता ईमान लाने वालों के लिए हिदायत और रहमत है। (77)

बेशक तुम्हारा रब अपने हुक्म से उन के दरमियान फ़ैसला करता है, और वह ग़ालिब, इल्म वाला है। (78)

पस अल्लाह पर भरोसा करो, बेशक तुम वाज़ेह हक़ पर हो। (79)

اِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ

पुकार	बहरों को	और तुम नहीं सुना सकते	मुर्दों को	तुम नहीं सुना सकते	बेशक तुम

اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٨٠﴾ وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِى الْعُمْىِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ

उन की गुमराही	से	अन्धों को	हिदायत देने वाले	और तुम नहीं	80	पीठ फेर कर	जब वह मुड़ जाएं

اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨١﴾

81	फ़रमांबरदार	पस वह	हमारी आयतों पर	ईमान लाता है	जो	मगर-सिर्फ़	तुम सुनाते	नहीं

وَاِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ

ज़मीन से	एक जानवर	उन के लिए	हम निकालेंगे	उन पर	वाक़े (पूरा) हो जाएगा वादा (अ़ज़ाब)	और जब

ع ٦ ١٦ ٢ تُكَلِّمُهُمْ اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٨٢﴾

82	यक़ीन न करते	हमारी आयात पर	थे	क्यों कि लोग	वह उन से बातें करेगा

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ يُّكَذِّبُ

झुटलाते थे	से जो	एक गिरोह	हर उम्मत	से	हम जमा करेंगे	और जिस दिन

بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿٨٣﴾ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْ قَالَ اَكَذَّبْتُمْ

क्या तुम ने झुटलाया	फ़रमाएगा	जब वह आजाएं	यहां तक	83	उन की जमाअ़त बन्दी की जाएगी	फिर वह	हमारी आयतों को

بِاٰيٰتِىْ وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا اَمَّا ذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٨٤﴾

84	तुम करते थे	या क्या	इल्म के	उन को	हालांकि अहाता में नहीं लाए थे	मेरी आयात को

وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿٨٥﴾

85	न बोल सकेंगे वह	पस वह	इस लिए कि उन्हों ने ज़ुल्म किया	उन पर	वादा (अ़ज़ाब)	और वाक़े (पूरा) हो गया

اَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّيْلَ لِيَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا

देखने को	और दिन	उस में	कि आराम हासिल करें	रात	हम ने बनाया	कि हम	क्या वह नहीं देखते

اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٨٦﴾ وَيَوْمَ يُنْفَخُ

फूंक मारी जाएगी	और जिस दिन	86	ईमान रखते हैं	उन लगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में	बेशक

فِى الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ

ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	तो घबरा जाएगा	सूर में

اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَتَرَى الْجِبَالَ

पहाड़ (जमा)	और तू देखता है	87	आ़जिज़ हो कर	उस के आगे आएंगे	और सब	अल्लाह चाहे	जिसे	सिवा

تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِىَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ صُنْعَ اللّٰهِ

अल्लाह की कारीगरी	बादलों की तरह चलना	चलेंगे	और वह	जमा हुआ	तो ख़याल करता है उन्हें

الَّذِىْٓ اَتْقَنَ كُلَّ شَىْءٍ اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٨٨﴾

88	तुम करते हो	उस से जो	बाख़बर	बेशक वह	हर शै	ख़ूबी से बनाया	वह जिस ने

बेशक तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते, न बहरों को (अपनी) पुकार सुना सकते हो (ख़ुसूसन) जब वह पीठ फेर कर मुड़ जाएं। **(80)** और तुम अन्धों को उन की गुमराही से हिदायत देने वाले नहीं। तुम सिर्फ़ (उस को) सुना सकते हो जो ईमान लाता है हमारी आयतों पर, पस वह फ़रमांबरदार हैं। **(81)** और जब उन पर वादा-ए-अ़ज़ाब पूरा हो जाएगा तो हम उन के लिए निकालेंगे ज़मीन से एक जानवर, वह उन से बातें करेगा क्यों कि लोग हमारी आयतों पर यक़ीन न करते थे। **(82)** और जिस दिन हम हर उम्मत में से एक गिरोह जमा करेंगे उन में से जो हमारी आयतों को झुटलाते थे, फिर उन की जमाअ़त बन्दी की जाएगी। **(83)** यहां तक कि जब वह आजाएंगे (अल्लाह तआ़ला) फ़रमाएगा क्या तुम ने मेरी आयतों को झुटलाया था हालांकि तुम उन को (अपने) अहाता-ए-इल्म में भी नहीं लाए थे (या बतलाओ) तुम क्या करते थे? **(84)** और उन पर वादा-ए-अ़ज़ाब पूरा हो गया, इस लिए कि उन्हों ने ज़ुल्म किया था, पस वह बोल न सकेंगे। **(85)** क्या वह नहीं देखते कि हम ने रात को इस लिए बनाया कि वह उस में आराम हासिल करें और दिन देखने को (रोशन बनाया) बेशक उस में अलबत्ता उन लगों के लिए निशानियां हैं जो ईमान रखते हैं। **(86)** और जिस दिन सूर में फूंक मारी जाएगी तो घबरा जाएगा जो भी आस्मानों में है और जो ज़मीन में हैं, सिवाए उस के जिसे अल्लाह चाहे और वह सब उस के आगे आ़जिज़ हो कर आएंगे। **(87)** और तू पहाड़ों को देखता है तो उन्हें (अपनी जगह) जमा हुआ ख़याल करता है, और वह (क़ियामत के दिन) बादलों की तरह चलेंगे (उड़ते फिरेंगे), अल्लाह की कारीगरी है जिस ने हर शै को ख़ूबी से बनाया है बेशक वह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। **(88)**

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ

उस दिन	घबराहट से	और वह	उस से	बेहतर	तो उस के लिए	किसी नेकी के साथ	जो आया

اٰمِنُوْنَ ﴿٨٩﴾ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِى النَّارِ ؕ هَلْ

क्या नहीं	आग में	उन के मुंह	औन्धे डाले जाएंगे	बुराई के साथ	आया	और जो	89	महफ़ूज़ होंगे

تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٠﴾ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ

इस	रब	इबादत करूँ	कि	इसके सिवा मुझे हुक्म नहीं दिया गया	90	तुम करते थे	जो	मगर-सिर्फ़	बदला दिए जाओगे

الْبَلْدَةِ الَّذِىْ حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَىْءٍ ۖ وَّاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ

से	मैं रहूँ	कि	और मुझे हुक्म दिया गया	हर शै	और उसी के लिए	उस ने मोहतरम बनाया	वह जिसे	शहर

الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٩١﴾ وَاَنْ اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِىْ لِنَفْسِهٖ ۚ

अपनी ज़ात के लिए	वह हिदायत पाता है	तो इस के सिवा नहीं	हिदायत पाई	पस जो	मैं तिलावत करूँ क़ुरआन	और यह कि	91	मुस्लिमीन-फ़रमांबरदारों

وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ اِنَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿٩٢﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	और फ़रमा दें	92	डराने वालों में से (डराने वाला हूँ)	मैं	इस के सिवा नहीं	तो फ़रमा दें	गुमराह हुआ	और जो

ع ١١ ٣ سَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾

93	तुम करते हो	उस से जो	ग़ाफ़िल (बेख़बर)	तुम्हारा रब	और नहीं	पस तुम पहचान लोगे उन्हें	अपनी निशानियां	वह जल्द दिखादेगा तुम्हें

آيَاتُهَا ٨٨ ❀ (٢٨) سُوْرَةُ الْقَصَصِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٩

रुकुआत 9 | (28) सूरतुल क़सस / क़िस्से | आयात 88

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

طٰسٓمّٓ ﴿١﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾ نَتْلُوْا عَلَيْكَ مِنْ نَّبَاِ

कुछ ख़बर (अहवाल)	तुम पर	हम पढ़ते हैं	2	वाज़ेह किताब	आयतें	यह	1	ता सीम मीम

مُوْسٰى وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٣﴾ اِنَّ فِرْعَوْنَ

फ़िरऔन	बेशक	3	उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं	ठीक ठीक	और फ़िरऔन	मूसा (अ)

عَلَا فِى الْاَرْضِ وَجَعَلَ اَهْلَهَا شِيَعًا يَّسْتَضْعِفُ طَآئِفَةً

एक गिरोह	कमज़ोर कर रखा था	अलग अलग गिरोह	उस के बाशिन्दे	और उस ने कर दिया	ज़मीन (मुल्क) में	सरकशी कर रहा था

مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَيَسْتَحْىٖ نِسَآءَهُمْ ۚ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ

से	था	बेशक वह	उन की औरतों को	और ज़िन्दा छोड़ देता था	उन के बेटों को	ज़ुबह करता था	उन में से

الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٤﴾ وَنُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا

कमज़ोर कर दिए गए थे	उन लोगों पर जो	हम एहसान करें	कि	और हम चाहते थे	4	मुफ़्सिद (जमा)

فِى الْاَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ اَئِمَّةً وَّنَجْعَلَهُمُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٥﴾

5	वारिस (जमा)	और हम बनाएं उन्हें	पेशवा (जमा)	और हम बनाएं उन्हें	ज़मीन (मुल्क) में

जो आया किसी नेकी के साथ तो उस के लिए (उस का अजर) उस से बेहतर है और वह उस दिन घबराहट से महफ़ूज़ होंगे। (89)
और जो बुराई के साथ आया तो वह औन्धे मुंह आग में डाले जाएंगे, तुम सिर्फ़ (वही) बदला दिए जाओगे (बदला पाओगे) जो तुम करते थे। (90)
(आप स फ़रमा दें) इस के सिवा नहीं कि मुझे हुक्म दिया गया है कि इस शहर (मक्का) के रब की इबादत करूँ जिसे उस ने मोहतरम बनाया है, और उसी के लिए है हर शै, और मुझे हुक्म दिया गया कि मैं मुसलमानों (फ़रमांबरदारों) में से रहूँ। (91)
और यह कि मैं क़ुरआन की तिलावत करूँ (सुना दूँ), पस इस के सिवा नहीं कि जो हिदायत पाता है, वह अपनी ज़ात के लिए हिदायत पाता है और जो गुमराह हुआ तो आप (स) फ़रमा दें कि इस के सिवा नहीं कि मैं तो डराने वाला हूँ। (92)
और आप (स) फ़रमा दें तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, वह तुम्हें जल्द दिखादेगा अपनी निशानियां, पस तुम जल्द उन्हें पहचान लोगे, और तुम्हारा रब उस से बेखबर नहीं जो तुम करते हो। (93)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
ता-सीम-मीम। (1)
यह वाज़ेह किताब (क़ुरआन) की आयतें है। (2)
हम तुम पर पढ़ते हैं (तुम्हें सुनाते हैं) कुछ अहवाले मूसा (अ) और फ़िरऔन का ठीक ठीक, उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। (3)
बेशक फ़िरऔन मुल्क में सरकशी कर रहा था, और उस ने कर दिया था उस के लोगों को अलग अलग गिरोह, उन में से एक गिरोह (बनी इस्राईल) को कमज़ोर कर रखा था उन के बेटों को ज़ुबह करता, और ज़िन्दा छोड़ देता था उन की औरतों (बेटियों) को, बेशक वह मुफ़्सिदों में से (फ़सादी) था। (4)
और हम चाहते थे कि उन लोगों पर एहसान करें जो मुल्क में कमज़ोर कर दिए गए थे, और हम उन्हें पेश्वा बनाएं, और हम उन्हें (मुल्क का) वारिस बनाएं। (5)

وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْاَرْضِ وَنُرِيَ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا

और उन के लशकर	और हामान	फ़िरऔन	और हम दिखा दें	ज़मीन (मुल्क) में	उन्हें	और हम क़ुदरत (हुकूमत) दें

مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ﴿٦﴾ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّ مُوْسٰٓى

मूसा की माँ	तरफ़-को	और हम ने इल्हाम किया	6	वह डरते थे	जिस चीज़	उन से

اَنْ اَرْضِعِيْهِ ۚ فَاِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَاَلْقِيْهِ فِي الْيَمِّ وَلَا تَخَافِيْ

और न डर	दर्या में	तो डालदे उसे	तू उस पर डरे	फिर जब	कि तू दूध पिलाती रह उसे

وَلَا تَحْزَنِيْ ۚ اِنَّا رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ وَجَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٧﴾

7	रसूलों	से	और उसे बना देंगे	तेरी तरफ़	उसे लौटा देंगे	बेशक हम	और न ग़म खा

فَالْتَقَطَهٗٓ اٰلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا وَّحَزَنًا ۭ اِنَّ

बेशक	और ग़म का बाइस	दुश्मन	उन के लिए	ताकि वह हो	फ़िरऔन के घर वाले	फिर उठा लिया उसे

فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا كَانُوْا خٰطِــِٕيْنَ ﴿٨﴾ وَقَالَتِ

और कहा	8	ख़ताकार (जमा)	थे	और उन के लशकर	और हामान	फ़िरऔन

امْرَاَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّيْ وَلَكَ ۭ لَا تَقْتُلُوْهُ ڰ

तू क़त्ल न कर इसे	और तेरे लिए	मेरी आँखों के लिए	ठंडक	फ़िरऔन	बीवी

عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٩﴾

9	(हक़ीक़ते हाल) नहीं जानते थे	और वह	बेटा	हम बना लें इसे	या	कि नफ़ा पहुँचाए हमें	शायद

وَاَصْبَحَ فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا ۭ اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِيْ بِهٖ

उस को	कि ज़ाहिर कर देती	तहक़ीक़ क़रीब था	सब्र से ख़ाली (बेक़रार)	मूसा (अ) की माँ	दिल	और हो गया

لَوْلَآ اَنْ رَّبَطْنَا عَلٰى قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠﴾

10	यक़ीन करने वाले	से	कि वह रहे	उस के दिल पर	कि गिरह लगाते हम	अगर न होता

وَقَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِّيْهِ ۡ فَبَصُرَتْ بِهٖ عَنْ جُنُبٍ وَّهُمْ

और वह	दूर से	उस को	फिर देखती रह	उस के पीछे जा	उस की बहन को	और उस (मूसा अ की वालिदा) ने कहा

لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١١﴾ وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ فَقَالَتْ

वह (मूसा की बहन) बोली	पहले से	दूध पिलाने वाली औरतें (दाइयां)	उस से	और हम ने रोक रखा	11	(हक़ीक़ते हाल) न जानते थे

هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰٓى اَهْلِ بَيْتٍ يَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ وَهُمْ لَهٗ

उस के लिए	और वह	तुम्हारे लिए	वह उस की पर्वरिश करें	एक घर वाले	क्या मैं बतलाऊँ तुम्हें

نٰصِحُوْنَ ﴿١٢﴾ فَرَدَدْنٰهُ اِلٰٓى اُمِّهٖ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ

और वह ग़मगीन न हो	उस की आँख	ताकि ठंडी रहे	उसकी माँ की तरफ़	तो हम ने लौटा दिया उस को	12	ख़ैर ख़ाह

وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣﴾ ع ١٣

13	वह नहीं जानते	उन में से बेशतर	और लेकिन	सच्चा	अल्लाह का वादा	कि	और ताकि जान ले

और हम उन्हें हुकूमत दें मुल्क में। और हम फ़िरऔन और हामान और उन के लशकर को उन (कमज़ोरों के हाथों) दिखा दें जिस चीज़ से वह डरते थे। (6)

और हम ने मूसा (अ) की माँ को इल्हाम किया कि वह उस को दूध पिलाती रह, फिर जब उस पर (उस के बारे में) डरे तो उसे दर्या में डाल दे, और न डर और न ग़म खा, बेशक हम उसे तेरी तरफ़ लौटा देंगे, और उसे बना देंगे रसूलों में से। (7)

फिर फ़िरऔन के घर वालों ने उसे उठा लिया ताकि (आख़िर कार) वह उन के लिए दुश्मन और ग़म का बाइस हो, बेशक फ़िरऔन और हामान और उन के लशकर ख़ताकार थे। (8)

और कहा फ़िरऔन की बीवी ने, यह आँखों की ठंडक है मेरे लिए और तेरे लिए, इसे क़त्ल न कर, शायद हमें नफ़ा पहुँचाए या हम इसे बेटा बनालें, और वह हक़ीक़ते हाल नहीं जानते थे। (9)

और मूसा (अ) की माँ का दिल बेक़रार हो गया, तहक़ीक़ क़रीब था कि वह उस को ज़ाहिर कर देती अगर हम ने उस के दिल पर गिरह न लगाई होती कि वह यक़ीन करने वालों में से रहे। (10)

और मूसा (अ) की वालिदा ने उस की बहन को कहा कि उस के पीछे जा, फिर उसे दूर से देखती रह, और वह हक़ीक़ते हाल न जानते थे। (11)

और हम ने पहले से उस से दाइयों को रोक रखा था, तो मूसा (अ) की बहन बोली, क्या मैं तुम्हें एक घर वाले बतलाऊँ जो तुम्हारे लिए उस की पर्वरिश करें और वह उस के ख़ैर ख़ाह हों। (12)

तो हम ने उस को उस की माँ की तरफ़ लौटा दिया, ताकि ठंडी रहें उस की आँख, और वह ग़मगीन न हो, और ताकि जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है, और लेकिन उन के बेशतर नहीं जानते। (13)

وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰٓى اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ

और इसी तरह	और इल्म	हिक्मत	हम ने अ़ता किया उसे	और पूरा (तवाना) हो गया	वह पहुँचा अपनी जवानी	और जब

نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٤﴾ وَدَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ غَفْلَةٍ

ग़फ़्लत	वक़्त पर	शहर	और वह दाख़िल हुआ	14	नेकी करने वाले	हम बदला दिया करते हैं

مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ ۗ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا

और वह (दूसरा)	उस की बिरादरी	से	यह (एक)	वह बाहम लड़ते हुए	दो आदमी	उस में	तो उस ने पाया	उस के लोग

مِنْ عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِىْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِىْ مِنْ عَدُوِّهٖ ۙ

उस के दुश्मन से	वह जो	उस पर	उस की बिरादरी से	वह जो	तो उस ने उस (मूसा) से मदद मांगी	उस के दुश्मन का	से

فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ۗ قَالَ هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ؕ

शैतान का काम (हरकत)	से	यह	उस ने कहा	उस का	फिर काम तमाम कर दिया	मूसा (अ)	तो एक मुक्का मारा उस को

اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ فَاغْفِرْ لِىْ

पस बख़्शदे मुझे	अपनी जान	मैं ने ज़ुल्म किया	बेशक मैं	ऐ मेरे रब	उस ने अ़रज़ की	15	सरीह (खुला)	बहकाने वाला	दुश्मन	बेशक वह

فَغَفَرَ لَهٗ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦﴾ قَالَ رَبِّ بِمَآ اَنْعَمْتَ عَلَىَّ

मुझ पर	तू ने इन्आ़म किया	ऐ मेरे रब जैसा कि	उस ने कहा	16	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	वही	बेशक	तो उस ने बख़्श दिया उस को

فَلَنْ اَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٧﴾ فَاَصْبَحَ فِى الْمَدِيْنَةِ خَآئِفًا

डरता हुआ	शहर में	पस सुबह हुई उस की	17	मुजरिमों का	मददगार	तो मैं हरगिज़ न होंगा

يَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِى اسْتَنْصَرَهٗ بِالْاَمْسِ يَسْتَصْرِخُهٗ ؕ قَالَ

कहा	वह (फिर) उस से फ़र्याद कर रहा है	कल	उस ने मदद मांगी थी उस से	तो यकायक वह जिस	इन्तिज़ार करता हुआ

لَهٗ مُوْسٰٓى اِنَّكَ لَغَوِىٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٨﴾ فَلَمَّآ اَنْ اَرَادَ اَنْ يَّبْطِشَ

हाथ डाले	कि	उस ने चाहा	कि	फिर जब	18	खुला	अलबत्ता गुमराह	बेशक तू	मूसा (अ)	उस को

بِالَّذِىْ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اَتُرِيْدُ اَنْ تَقْتُلَنِىْ

तू क़त्ल करदे मुझे	कि	क्या तू चाहता है	ऐ मूसा (अ)	उस ने कहा	उन दोनों का दुश्मन	वह	उस पर जो

كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا ۢ بِالْاَمْسِ ۖ اِنْ تُرِيْدُ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا

ज़बरदस्ती करता	कि तू हो	मगर-सिर्फ़	तू चाहता	नहीं	कल	एक आदमी	जैसे क़त्ल किया तू ने

فِى الْاَرْضِ وَمَا تُرِيْدُ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿١٩﴾ وَجَآءَ

और आया	19	सुधार करने वाले	से	तू हो	कि	और तू नहीं चाहता	सरज़मीन में

رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ يَسْعٰى ۙ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنَّ الْمَلَاَ

सरदार	बेशक	ऐ मूसा (अ)	उस ने कहा	दौड़ता हुआ	शहर का दूर सिरा	से	एक आदमी

يَاْتَمِرُوْنَ بِكَ لِيَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّىْ لَكَ مِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٢٠﴾

20	सलाहकार (जमा)	से	तेरे लिए	बेशक मैं	पस तू निकल जा	ताकि क़त्ल करडालें तुझे	तेरे बारे में	वह मश्वरा कर रहे हैं

और जब (मूसा अ) अपनी जवानी को पहुँचा और पूरी तरह तवाना हो गया तो हम ने उसे हिक्मत और इल्म अ़ता किया, और हम नेकी करने वालों को इसी तरह बदला दिया करते हैं। (14)

और वह शहर में दाख़िल हुआ जब कि उस के लोग ग़फ़्लत में थे तो उस ने दो आदमियों को बाहम लड़ते हुए पाया, एक उस की बिरादरी से था और दूसरा उस के दुश्मनों में से था, तो जो उस की बिरादरी से था उस ने उस (के मुक़ाबले) पर जो उस के दुश्मनों में से था मूसा (अ) से मदद मांगी तो मूसा (अ) ने उस को एक मुक्का मारा फिर उस का काम तमाम कर दिया, उस (मूसा अ) ने कहा यह काम शैतान (की हरकत) से हुआ, बेशक वह दुश्मन है खुला बहकाने वाला। (15)

उस ने अ़रज़ की ऐ मेरे रब! मैं ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया, पस मुझे बख़्शदे, तो उस ने उसे बख़्श दिया, बेशक वही बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान। (16)

उस ने कहा, ऐ मेरे रब! जैसा कि तू ने मुझ पर इन्आ़म किया है तो मैं हरगिज़ न होंगा (कभी) मुजरिमों का मददगार। (17)

पस शहर में उस की सुबह हुई डरते हुए इन्तिज़ार करते हुए (कि देखें अब किया होता है) तो नागहां वही जिस ने कल उस से मदद मांगी थी (देखा कि) वह फिर उस से फ़र्याद कर रहा है। मूसा (अ) ने उस को कहा बेशक तू गुमराह है खुला। (18)

फिर जब उस ने चाहा कि उस पर हाथ डाले जो उन दोनों का दुश्मन था, तो उस ने कहा ऐ मूसा (अ)! क्या तू चाहता है कि तू मुझे क़त्ल कर दे जैसे तू ने कल एक आदमी को क़त्ल किया था, तू सिर्फ़ (यही) चाहता है कि तू इस सरज़मीन में ज़बरदस्ती करता फिरे और तू नहीं चाहता कि मुसलिहीन (इस्लाह करने वालों) में से हो। (19)

और एक आदमी शहर के परले सिरे से दौड़ता हुआ आया, उस ने कहा, ऐ मूसा (अ)! बेशक सरदार तेरे बारे में मश्वरा कर रहे हैं ताकि तुझे क़त्ल कर डालें, पस तू (यहां से) निकल जा, बेशक मैं तेरे ख़ैर ख़्वाहों में से हूँ। (20)

ع ٨ ٢ ٥ فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ ۫ قَالَ رَبِّ نَجِّنِىْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢١﴾ ع

21	ज़ालिमों की क़ौम	से	मुझे बचाले	उस ने कहा (दुआ की) ऐ मेरे परवरदिगार	इन्तिज़ार करते हुए	डरते हुए	वहां से	पस वह निकला

وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسٰى رَبِّىْٓ اَنْ يَّهْدِيَنِىْ

कि मुझे दिखाए	मेरा रब	उम्मीद है	कहा	मदयन	तरफ़	उस ने रुख़ किया	और जब

سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿٢٢﴾ وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ

से-का	एक गिरोह	उस पर	उस ने पाया	मदयन	पानी	वह आया	और जब	22	सीधा रास्ता

النَّاسِ يَسْقُوْنَ ۫ وَوَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ تَذُوْدٰنِ ۚ

रोके हुए हैं	दो औरतें	उन से अ़लाहिदा	और उस ने पाया (देखा)	पानी पिला रहे हैं	लोग

قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ۭ قَالَتَا لَا نَسْقِىْ حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَآءُ ٜ وَاَبُوْنَا

और हमारे अब्बा	चरवाहे	वापस ले जाएं	जब तक कि	हम पानी नहीं पिलातीं	वह दोनों बोलीं	तुम्हारा क्या हाल है	उस ने कहा

شَيْخٌ كَبِيْرٌ ﴿٢٣﴾ فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰٓى اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ اِنِّىْ

बेशक मैं	ऐ मेरे रब	फिर अ़र्ज़ किया	साए की तरफ़	फिर वह फिर आया	उन के लिए	तो उस ने पानी पिलाया	23	बहुत बूढ़े

لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَىَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ﴿٢٤﴾ فَجَآءَتْهُ اِحْدٰىهُمَا تَمْشِىْ

चलती हुई	उन दोनों में से एक	फिर उस के पास आई	24	मोहताज	कोई भलाई (नेमत)	मेरी तरफ़	तू उतारे	उस का जो

عَلَى اسْتِحْيَآءٍ ۡ قَالَتْ اِنَّ اَبِىْ يَدْعُوْكَ لِيَجْزِيَكَ اَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ۭ

हमारे लिए	जो तू ने पानी पिलाया	सिला	ताकि तुझे दें वह	तुझे बुलाते हैं	मेरे वालिद	बेशक	वह बोली	शर्म से

فَلَمَّا جَآءَهٗ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفْ ۪ نَجَوْتَ مِنَ

से	तुम बच आए	डरो नहीं	उस ने कहा	अहवाल	उस से	और बयान किया	उस के पास आया	पस जब

الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٥﴾ قَالَتْ اِحْدٰىهُمَا يٰٓاَبَتِ اسْتَاْجِرْهُ ۡ اِنَّ خَيْرَ

बेहतर	बेशक	इसे मुलाज़िम रख लो	ऐ मेरे बाप	उन में से एक	बोली वह	25	ज़ालिमों की क़ौम

مَنِ اسْتَاْجَرْتَ الْقَوِىُّ الْاَمِيْنُ ﴿٢٦﴾ قَالَ اِنِّىْٓ اُرِيْدُ اَنْ اُنْكِحَكَ

निकाह करदूँ तुझ से	कि	बेशक मैं चाहता हूँ	(बाप) ने कहा	26	अमानत दार	ताक़तवर	तुम मुलाज़िम रखो	जो-जिसे

اِحْدَى ابْنَتَىَّ هٰتَيْنِ عَلٰٓى اَنْ تَاْجُرَنِىْ ثَمٰنِىَ حِجَجٍ ۚ فَاِنْ اَتْمَمْتَ

तम पूरे करो	फिर अगर	आठ (8) साल (जमा)	तुम मेरी मुलाज़िमत करो	कि	(इस शर्त) पर	यह दो (2)	अपनी दो बेटियां	एक

عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اَشُقَّ عَلَيْكَ ۭ سَتَجِدُنِىْٓ

अ़नक़रीब तुम पाओगे मुझे	तुम पर	कि मैं मशक़्क़त डालूँ	चाहता मैं	और नहीं	तो तुम्हारी तरफ़ से	दस (10)

اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾ قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِىْ وَبَيْنَكَ ۭ اَيَّمَا الْاَجَلَيْنِ

मुद्दत दोनों में	जो	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	यह	उस ने कहा	27	नेक (ख़ुश मामला) लोगों में से	इनशा अल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा)

ع ٧ ٣ ٦ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَىَّ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٢٨﴾ ع

28	गवाह	जो हम कह रहे हैं	पर	और अल्लाह	मुझ पर	कोई जब्र (मुतालबा) नहीं	मैं पूरी करूँ

पस वह निकला वहां से डरते हुए और इन्तिज़ार करते हुए (कि देखें क्या होता है), उस ने दुआ की कि ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे ज़ालिमों की क़ौम से बचाले। (21)
और जब उस ने मदयन की तरफ़ रुख़ किया तो कहा उम्मीद है मेरा रब मुझे सीधा रास्ता दिखाएगा। (22)
और जब वह मदयन के पानी (के कुंए) पर आया तो उस ने लोगों के एक गिरोह को पानी पिलाते हुए पाया, और उस ने देखा दो औरतें उन से अ़लाहिदा (अपनी बकरियां) रोके हुए (खड़ी) हैं, उस ने कहा तुम्हारा क्या हाल है? वह बोलीं हम पानी नहीं पिलातीं जब तक चरवाहे (अपने जानवरों को पानी पिला कर) वापस न ले जाएं और हमारे अब्बा बूढ़े हैं। (23)
तो उस ने उन की (बकरियों को) पानी पिलाया। फिर साए की तरफ़ फिर आया, फिर अ़र्ज़ किया ऐ मेरे परवरदिगार! बेशक जो नेमत तू मेरी तरफ़ उतारे मैं उस का मोहताज हूँ। (24)
फिर उन दोनों में से एक उस के पास आई शर्म से चलती हुई, वह बोली, बेशक मेरे वालिद तुम्हें बुला रहे हैं कि तुम्हें उस का सिला दें जो तू ने हमारे लिए (बकरियों को) पानी पिलाया है, पस जब मूसा (अ) उस (बाप) के पास आया और उस से अहवाल बयान किया तो उस ने कहा डरो नहीं, तुम ज़ालिमों की क़ौम से बच आए हो। (25)
उन में से एक बोली, ऐ मेरे बाप इसे मुलाज़िम रख लें, बेशक बेहतरीन मुलाज़िम जिसे तुम रखो (वही हो सकता है) जो ताक़तवर अमानत दार हो। (26)
(बाप) ने कहा मैं चाहता हूँ कि तुम से अपनी इन दो बेटियों में से एक का निकाह इस शर्त पर कर दूँ कि तुम आठ (8) साल मेरी मुलाज़िमत करो, अगर दस (10) साल पूरे करलो तो (वह) तुम्हारी तरफ़ से (नेकी) हो गी, मैं नहीं चाहता कि मैं तुम पर मशक़्क़त डालूँ, अगर अल्लाह ने चाहा तो अ़नक़रीब तुम मुझे ख़ुश मामला लोगों में से पाओगे। (27)
मूसा (अ) ने कहा यह मेरे दरमियान और तुम्हारे दरमियान (अ़हद) है, मैं दोनों में से जो मुद्दत पूरी करूँ मुझ पर कोई मुतालबा नहीं, और अल्लाह गवाह है उस पर जो हम कह रहे हैं। (28)

فَلَمَّا قَضٰى مُوْسَى الْاَجَلَ وَسَارَ بِاَهْلِهٖٓ اٰنَسَ مِنْ جَانِبِ

तरफ़	से	उस ने देखी	साथ अपने घर वाली	और चला वह	मुद्दत	मूसा (अ)	पूरी कर दी	फिर जब

الطُّوْرِ نَارًا ۚ قَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْٓ

शायद मैं	आग	बेशक मैं ने देखी	तुम ठहरो	अपने घर वालों से	उस ने कहा	एक आग	कोहे तूर

اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿٢٩﴾

29	आग तापो	ताकि तुम	आग से	या चिंगारी	कोई ख़बर	उस से	मैं लाऊँ तुम्हारे लिए

فَلَمَّآ اَتٰىهَا نُوْدِيَ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْاَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ

जगह में	दायां	मैदान	किनारे से	निदा दी गई	वह आया उस के पास	फिर जब

الْمُبٰرَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ اَنْ يّٰمُوْسٰٓى اِنِّيْٓ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٠﴾

30	जहानों का परवरदिगार	अल्लाह	बेशक मैं	ऐ मूसा (अ)	कि	एक दरख़्त से	बरकत वाली

وَاَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۭ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَاۗنٌّ وَّلّٰى

वह लौटा	सांप	गोया कि वह	लहराते हुए	फिर जब उस ने उसे देखा	अपना अ़सा	डालो	और यह कि

مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ۭ يٰمُوْسٰٓى اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ ڰ اِنَّكَ مِنَ

से	बेशक तू	और डर नहीं	आगे आ	ऐ मूसा (अ)	और पीछे मुड़ कर न देखा	पीठ फेर कर

الْاٰمِنِيْنَ ﴿٣١﴾ اُسْلُكْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاۗءَ مِنْ

से-के	रोशन सफ़ेद	वह निकलेगा	अपने गरेबान	अपना हाथ	तू डाल ले	31	अमन पाने वाले

غَيْرِ سُوْۗءٍ وَّاضْمُمْ اِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ

दो (2) दलीलें	पस यह दोनों	ख़ौफ़ से	अपना बाजू	अपनी तरफ़	और मिला लेना	बग़ैर किसी ऐब

مِنْ رَّبِّكَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٣٢﴾

32	नाफ़रमान	एक गिरोह	हैं	बेशक वह	और उसके सरदार (जमा)	फ़िरऔन	तरफ़	तेरे रब (की तरफ़) से

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ﴿٣٣﴾

33	कि वह मुझे क़त्ल कर देंगे	सो मैं डरता हूँ	एक शख़्स	उन (में) से	बेशक मैं ने मार डाला है	ऐ मेरे रब	उस ने कहा

وَاَخِيْ هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّيْ لِسَانًا فَاَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْاً

मेरे साथ मददगार	सो भेजदे उसे	ज़बान	मुझ से	ज़ियादा फ़सीह	वह	हारून (अ)	और मेरा भाई

يُّصَدِّقُنِيْٓ ۡ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ﴿٣٤﴾ قَالَ سَنَشُدُّ

हम अभी मज़बूत कर देंगे	फ़रमाया	34	वह झुटलाएंगे मुझे	कि	बेशक मैं डरता हूँ	वह तस्दीक़ करे मेरी

عَضُدَكَ بِاَخِيْكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا يَصِلُوْنَ

पस वह न पहुँचेंगे	ग़ल्बा	तुम्हारे लिए	और हम अ़ता करेंगे	तेरे भाई से	तेरा बाजू

اِلَيْكُمَا ۚ بِاٰيٰتِنَآ ۚ اَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغٰلِبُوْنَ ﴿٣٥﴾

35	ग़ालिब रहोगे	पैरवी करे तुम्हारी	और जो	तुम दोनों	हमारी निशानियों के सबब	तुम तक

फिर जब मूसा (अ) ने अपनी मुद्दत पूरी कर दी तो अपनी घर वाली (वीवी) को साथ ले कर चला, उस ने देखी कोहे तूर की तरफ़ से एक आग, उस ने अपने घर वालों से कहा तुम ठहरो, बेशक मैं ने आग देखी है, शायद मैं उस से तुम्हारे लिए (रास्ते की) कोई ख़बर या आग की चिंगारी लाऊँ ताकि तुम आग तापो। (29)

फिर जब वह उस के पास आया तो निदा (आवाज़) दी गई दाएं मैदान के किनारे से, बरकत वाली जगह में, एक दरख़्त (के दरमियान) से, कि ऐ मूसा (अ)! बेशक मैं अल्लाह हूँ, तमाम जहानों का परवरदिगार। (30)

और यह कि तू अपना अ़सा (ज़मीन पर) डाल, फिर जब उस ने उसे देखा लहराते हुए, गोया कि वह सांप है, वह पीठ फेर कर लौटा, और पीछे मुड़ कर भी न देखा, (अल्लाह ने फ़रमाया) ऐ मूसा (अ)! आगे आ और डर नहीं, बेशक तू अम्न पाने वालों में से है। (31)

तू अपना हाथ अपने गरेबान में डाल, वह सफ़ेद रोशन हो कर निकलेगा, किसी ऐब के बग़ैर, फिर अपना बाजू ख़ौफ़ (दूर होने की ग़रज़) से अपनी तरफ़ मिला लेना (सुकेड़ लेना), पस (अ़सा और यदे बैज़ा) दोनों दलीलें हैं तेरे रब की तरफ़ से फ़िरऔन और उस के सरदारों की तरफ़, बेशक वह एक नाफ़रमान गिरोह है। (32)

उस ने कहा ऐ मेरे रब! बेशक मैं ने उन में से एक शख़्स को मार डाला, सो मैं डरता हूँ कि वह मुझे क़त्ल कर देंगे। (33)

और मेरे भाई हारून (अ) ज़बान (के एतिबार से) मुझ से ज़ियादा फ़सीह है, सो उसे मेरे साथ मददगार (बना कर) भेज दे कि वह मेरी तस्दीक़ करे, बेशक मैं डरता हूँ कि वह मुझे झुटलाएंगे। (34)

(अल्लाह ने) फ़रमाया हम अभी तेरे भाई से तेरे बाजू को मज़बूत कर देंगे और तुम दोनों के लिए अ़ता करेंगे ग़ल्बा, पस वह हमारी निशानियों के सबब तुम दानों तक न पहुँच सकेंगे, तुम दोनों और जिस ने तुम्हारी पैरवी की ग़ालिब रहोगे। (35)

معانقة ١١
عند المتأخرين

فَلَمَّا جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ

एक जादू	मगर	नहीं है यह	वह बोले	खुली- वाज़ेह	हमारी निशानियों के साथ	मूसा (अ)	आया उन के पास	फिर जब

مُّفْتَرًى وَّمَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٦﴾ وَقَالَ

और कहा	36	अपने अगले बाप दादा	में	यह- ऐसी बात	और नहीं सुनी है हम ने	इफ़्तिरा किया हुआ

مُوْسٰى رَبِّيْٓ اَعْلَمُ بِمَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَمَنْ تَكُوْنُ

होगा-है	और जिस	उस के पास से	हिदायत	लाया	उस को जो	खूब जानता है	मेरा रब	मूसा (अ)

لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ

फ़िरऔन	और कहा	37	ज़ालिम (जमा)	नहीं फ़लाह पाएंगे	बेशक वह	आख़िरत का अच्छा घर	उस के लिए

يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِيْ ۚ فَاَوْقِدْ لِيْ

पस आग जला मेरे लिए	अपने सिवा	माबूद	कोई	तुम्हारे लिए	नहीं जानता मैं	ऐ सरदारो

يٰهَامٰنُ عَلَى الطِّيْنِ فَاجْعَلْ لِّيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَطَّلِعُ اِلٰٓى

तरफ़	मैं झांकूँ	ताकि मैं	एक बुलन्द महल	फिर मेरे लिए बना (तैयार कर)	मिट्टी पर	ऐ हामान

اِلٰهِ مُوْسٰى ۙ وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٣٨﴾ وَاسْتَكْبَرَ

और मग़रूर हो गया	38	झूटे	से	अलबत्ता समझता हूँ उसे	और बेशक मैं	मूसा (अ)	माबूद

هُوَ وَجُنُوْدُهٗ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اِلَيْنَا

हमारी तरफ़	कि वह	और वह समझ बैठे	नाहक़	ज़मीन (दुनिया) में	और उस का लशकर	वह

لَا يُرْجَعُوْنَ ﴿٣٩﴾ فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ ۚ

दर्या में	फिर हम ने फेंक दिया उन्हें	और उस का लशकर	तो हम ने पकड़ा उसे	39	नहीं लौटाए जाएंगे

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٠﴾ وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً

सरदार	और हम ने बनाया उन्हें	40	ज़ालिम (जमा)	अन्जाम	हुआ	कैसा	सो देखो

يَّدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿٤١﴾

41	वह मदद न दिए जाएंगे	और रोज़े क़ियामत	जहन्नम की तरफ़	वह बुलाते हैं

وَاَتْبَعْنٰهُمْ فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ هُمْ

वह	और रोज़े क़ियामत	लानत	इस दुनिया	में	और हम ने लगादी उन के पीछे

ع ١٣ مِّنَ الْمَقْبُوْحِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ

किताब (तौरेत)	मूसा (अ)	और तहक़ीक़ हम ने अ़ता की	42	बदहाल लोग (जमा)	से

مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى بَصَآئِرَ

(जमा) बसीरत	पहली	उम्मतें	कि हलाक कीं हम ने	उस के बाद

لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٣﴾

43	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	और रहमत	और हिदायत	लोगों के लिए

फिर जब मूसा (अ) हमारी वाज़ेह निशानियों के साथ उन के पास आया तो वह बोले यह कुछ भी नहीं मगर एक इफ़्तिरा किया हुआ (घड़ा हुआ) जादू है, और हम ने ऐसी बात अपने अगले बाप दादा से नहीं सुनी है। (36)

और मूसा (अ) ने कहा मेरा रब उस को खूब जानता है जो उस के पास से हिदायत लाया है, और जिस के लिए आख़िरत का अच्छा घर (जन्नत) है, बेशक ज़ालिम (कभी) फ़लाह (कामयाबी) नहीं पाएंगे। (37)

और फ़िरऔन ने कहा, ऐ सरदारो, मैं नहीं जानता तुम्हारे लिए अपने सिवा कोई माबूद, पस ऐ हामान! मेरे लिए मिट्टी (की ईंटों) पर आग जला, फिर (उन पुख़्ता ईंटों से) मेरे लिए तैयार कर एक बुलन्द महल, ताकि मैं (वहां से) मूसा (अ) के माबूद को झांकूँ, और मैं तो उसे झूटों में से समझता हूँ। (38)

और वह और उस का लशकर दुनिया में नाहक़ मग़रूर हो गए और वह समझ बैठे कि वह हमारी तरफ़ नहीं लौटाए जाएंगे। (39)

तो हम ने उसे और उस के लशकर को पकड़ा और उन्हें दर्या में फेंक दिया, सो देखो कैसा ज़ालिमों का अन्जाम हुआ? (40)

और हम ने उन्हें सरदार बनाया जो जहन्नम की तरफ़ बुलाते रहे, और रोज़े क़ियामत वह न मदद दिए जाएंगे (उन की मदद न होगी)। (41)

और हम ने इस दुनिया में उन के पीछे लानत लगा दी और रोज़े क़ियामत वह बदहाल लोगों में से होंगे। (42)

और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) को तौरेत अ़ता की उस के बाद कि हम ने पहली उम्मतें हलाक कीं, लोगों के लिए बसीरत (आँखें खोलने वाली) और हिदायत ओ रहमत, ताकि वह नसीहत पकड़ें। (43)

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ اِذْ قَضَيْنَآ اِلٰى مُوْسَى الْاَمْرَ

हुक्म (वहि)	मूसा (अ) की तरफ़	हम ने भेजा	जब	मग़रिबी जानिब	और आप (स) न थे

وَمَا كُنْتَ مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَلٰكِنَّآ اَنْشَاْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ

उनकी, उन पर	तवील हो गई	बहुत सी उम्मतें	हम ने पैदा की	और लेकिन हम ने	44	देखने वाले	से	और आप (स) न थे

الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۙ

हमारी आयात	उन पर	तुम पढ़ते	अहले मदयन	में	रहने वाले	और आप (स) न थे	मुद्दत

وَلٰكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّوْرِ اِذْ نَادَيْنَا

जब हम ने पुकारा	तूर	किनारा	और आप (स) ने थे	45	रसूल बनाकर भेजने वाले	हम थे	और लेकिन हम

وَلٰكِنْ رَّحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ

डराने वाला	कोई	नहीं आया उन के पास	वह क़ौम	ताकि डर सुनाओ	अपने रब से	रहमत	और लेकिन

مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلَوْ لَآ اَنْ تُصِيْبَهُمْ

कि पहुँचे उन्हें	और एसा न हो	46	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	आप (स) से पहले

مُّصِيْبَةٌ ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَيَقُوْلُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ

भेजा तू ने	क्यों न	ऐ हमारे रब	तो वह कहते	उन के हाथ (उन के आमाल)	उस के सबब जो भेजा	कोई मुसीबत

اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾ فَلَمَّا

फिर जब	47	ईमान लाने वाले	से	और हम होते	तेरे अहकाम	पस पैरवी करते हम	कोई रसूल	हमारी तरफ़

جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْلَآ اُوْتِيَ مِثْلَ

जैसा	क्यों न दिया गया	कहने लगे	हमारी तरफ़ से	हक़	आया उन के पास

مَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى ۭ اَوَلَمْ يَكْفُرُوْا بِمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ۚ

इस से क़ब्ल	मूसा (अ)	उस का जो दिया गया	इन्कार किया उन्हों ने	क्या नहीं	मूसा (अ)	जो दिया गया

قَالُوْا سِحْرٰنِ تَظٰهَرَا ۡ وَقَالُوْٓا اِنَّا بِكُلٍّ كٰفِرُوْنَ ﴿٤٨﴾

48	इन्कार करने वाले	हर एक का	हम बेशक	और उन्हों ने कहा	एक दूसरे के पुश्त पनाह	वह दोनों जादू	उन्हों ने कहा

قُلْ فَاْتُوْا بِكِتٰبٍ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ هُوَ اَهْدٰى مِنْهُمَآ اَتَّبِعْهُ

मैं पैरवी करूँ उस की	इन दोनो से	ज़ियादा हिदायत	वह	अल्लाह के पास	से	कोई किताब	पस लाओ	फ़रमा दें

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٩﴾ فَاِنْ لَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ اَنَّمَا

कि सिर्फ़	तो जान लो	तुम्हारे लिए (तुम्हारी बात)	वह क़ुबूल न करें	फिर अगर	49	सच्चे (जमा)	अगर तुम हो

يَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ۭ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَيْرِ هُدًى

हिदायत के बग़ैर	अपनी ख़ाहिश	उस से जिस ने पैरवी की	ज़ियादा गुमराह	और कौन	अपनी ख़ाहिशात	वह पैरवी करते हैं

مِّنَ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٠﴾ ع ٥ ٨ ٨

50	ज़ालिम लोग (जमा)	हिदायत नहीं देता	बेशक अल्लाह	अल्लाह से (मिन जानिब अल्लाह)

और आप (स) (कोहे तूर के) मग़रिबी जानिब न थे जब हम ने मूसा (अ) की तरफ़ वहि भेजी और आप (स) (उस वाक़े के) देखने वालों में से न थे। (44)

और लेकिन हम ने बहुत सी उम्मतें पैदा कीं, फिर तवील हो गई उन की मुद्दत, और आप (स) अहले मदयन में रहने वाले न थे कि उन पर हमारे अहकाम पढ़ते (उन्हें हमारे अहकाम सुनाते) लेकिन हम थे रसूल बनाकर भेजने वाले। (45)

और आप (स) तूर के किनारे न थे जब हम ने पुकारा, और लेकिन रहमत आप (स) के रब से (कि नुबुव्वत अ़ता हुई) ताकि आप (स) इस क़ौम को डर सुनाएं जिस के पास आप (स) से पहले कोई डराने वाला नहीं आया, ताकि वह नसीहत पकड़ें। (46)

और एसा न हो कि उन्हें उन के आमाल के सबब कोई मुसीबत पहुँचे तो वह कहतेः ऐ हमारे रब! तू ने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यों न भेजा! पस हम तेरे अहकाम की पैरवी करते और हम होते ईमान लाने वालों में से। (47)

फिर जब उन के पास हमारी तरफ़ से हक़ आगया, कहने लगे कि क्यों न (मुहम्मद (स) को) दिया गया जैसा मूसा (अ) को दिया गया था, क्या उन्हों ने उस का इन्कार नहीं किया? जो उस से क़ब्ल मूसा (अ) को दिया गया, उन्हों ने कहा वह दोनों जादू हैं, वह दोनों एक दूसरे के पुश्त पनाह हैं, और उन्हों ने कहा बेशक हम हर एक का इन्कार करने वाले हैं। (48)

आप (स) फ़रमा दें तुम अल्लाह के पास से कोई किताब लाओ जो इन दोनों (क़ुरआन और तौरेत) से ज़ियादा हिदायत बख़्शने वाली हो कि मैं उस की पैरवी करूँ, अगर तुम सच्चे हो। (49)

फिर अगर वह आप (स) की बात क़ुबूल न करें तो जान लें कि वह सिर्फ़ अपनी ख़ाहिशात की पैरवी करते हैं, और उस से ज़ियादा कौन गुमराह है जिस ने अपनी ख़ाहिश की पैरवी की, अल्लाह की हिदायत के बग़ैर, बेशक अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (50)

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥١﴾ اَلَّذِيْنَ

वह लोग जो	51	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	(अपना) कलाम	उन के लिए	और अलबत्ता हम ने मुसलसल भेजा

اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَاِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ

पढ़ा जाता है उन पर (सामने)	और जब	52	ईमान लाते हैं	वह इस (क़ुरआन) पर	इस से क़ब्ल	जिन्हें हम ने किताब दी

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖٓ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَآ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهٖ مُسْلِمِيْنَ ﴿٥٣﴾

53	फ़रमांबरदार	इस के पहले ही	बेशक हम थे	हमारे रब (की तरफ़) से	हक़	बेशक यह	हम ईमान लाए इस पर	वह कहते हैं

اُولٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ اَجْرَهُمْ مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوْا وَيَدْرَءُوْنَ

और वह दूर करते हैं	इस लिए कि उन्हों ने सब्र किया	दोहरा	उन का अजर	दिया जाएगा उन्हें	यही लोग

بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَاِذَا سَمِعُوا

वह सुनते हैं	और जब	54	वह ख़र्च करते हैं	हम ने दिया उन्हें	और उस से जो	बुराई को	भलाई से

اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا عَنْهُ وَقَالُوْا لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ

तुम्हारे अ़मल (जमा)	और तुम्हारे लिए	हमारे लिए हमारे अ़मल	और कहते हैं	उस से	वह किनारा करते हैं	बेहूदा बात

سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ لَا نَبْتَغِي الْجٰهِلِيْنَ ﴿٥٥﴾ اِنَّكَ لَا تَهْدِيْ

हिदायत नहीं दे सकते	बेशक तुम	55	जाहिल (जमा)	हम नहीं चाहते	तुम पर	सलाम

مَنْ اَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ

ख़ूब जानता है	और वह	जिस को वह चाहता है	हिदायत देता है	और लेकिन (बल्कि) अल्लाह	जिस को चाहो

بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿٥٦﴾ وَقَالُوْٓا اِنْ نَّتَّبِعِ الْهُدٰى مَعَكَ نُتَخَطَّفْ

हम उचक लिए जाएंगे	तुम्हारे साथ	हिदायत	अगर हम पैरवी करें	और वह कहते हैं	56	हिदायत पाने वालों को

مِنْ اَرْضِنَا ؕ اَوَلَمْ نُمَكِّنْ لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا يُّجْبٰٓى اِلَيْهِ ثَمَرٰتُ

फल	उस की तरफ़	खिंचे चले आते हैं	हुर्मत वाला मुक़ामे अम्न	उन्हें	दिया ठिकाना हम ने	क्या नहीं	अपनी सरज़मीन से

كُلِّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّنْ لَّدُنَّا وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٧﴾

57	नहीं जानते	उन में अक्सर	और लेकिन	हमारी तरफ़ से	बतौरे रिज़्क़	हर शै (क़िस्म)

وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍۢ بَطِرَتْ مَعِيْشَتَهَا ۚ فَتِلْكَ مَسٰكِنُهُمْ

उन के मस्कन	सो, यह	अपनी मईशत	इतराती	बस्तियां	हलाक कर दीं हम ने	और कितनी

لَمْ تُسْكَنْ مِّنْۢ بَعْدِهِمْ اِلَّا قَلِيْلًا ؕ وَكُنَّا نَحْنُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٥٨﴾

58	वारिस (जमा)	हम	और हुए हम	क़लील	मगर	उन के बाद	न आबाद हुए

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى حَتّٰى يَبْعَثَ فِيْٓ اُمِّهَا رَسُوْلًا يَّتْلُوْا

वह पढ़े	कोई रसूल	उस की बड़ी बस्ती में	भेज दे	जब तक	बस्तियां	हलाक करने वाला	तुम्हारा रब	और नहीं है

عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرٰٓى اِلَّا وَاَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ ﴿٥٩﴾

59	ज़ालिम (जमा)	उन के रहने वाले	मगर (जब तक)	बस्तियां	हलाक करने वाले	और हम नहीं	हमारी आयात	उन पर

और अलबत्ता हम ने मुसलसल भेजा उन के लिए अपना कलाम, ताकि वह नसीहत पकड़ें। (51)
जिन लोगों को हम ने उस से क़ब्ल किताब दी वह इस क़ुरआन पर ईमान लाते हैं। (52)
और जब उन के सामने (क़ुरआन) पढ़ा जाता है तो वह कहते हैं हम इस पर ईमान लाए, बेशक यह हक़ है हमारे रब की तरफ़ से, बेशक हम थे पहले से फ़रमांबरदार। (53)
यही लोग हैं जिन्हें उन का अजर दोहरा दिया जाएगा इस लिए कि उन्हों ने सब्र किया और वह भलाई से बुराई को दूर करते हैं और जो हम ने उन्हें दिया वह उस में से ख़र्च करते हैं। (54)
और जब वह बेहूदा बात सुनते हैं तो उस से किनारा करते हैं, और कहते हैं कि हमारे लिए हमारे अ़मल तुम्हारे लिए तुम्हारे अ़मल, तुम पर सलाम हो, हम जाहिलों से (उलझना) नहीं चाहते। (55)
बेशक तुम जिस को चाहो हिदायत नहीं दे सकते, बल्कि अल्लाह जिस को चाहता है हिदायत देता है, और हिदायत पाने वालों को वह ख़ूब जानता है। (56)
और वह कहते है अगर हम तुम्हारे साथ हिदायत की पैरवी करें तो हम अपनी सरज़मीन से उचक लिए जाएंगे। क्या हम ने उन्हें हुर्मत वाले मुक़ामे अम्न में ठिकाना नहीं दिया, उस की तरफ़ खिंचे चले आते हैं फल हर क़िस्म के, हमारी तरफ़ से बतौर रिज़्क़, लेकिन उन में अक्सर नहीं जानते। (57)
और कितनी (ही) बस्तियां हम ने हलाक कर दीं जो अपनी आमदनी और गुज़र बसर पर इतराती थीं, सो यह हैं उन के मस्कन, न आबाद हुए उन के बाद मगर कम, और हम ही हुए वारिस। (58)
और तुम्हारा रब नहीं है बस्तियों को हलाक करने वाला, जब तक उस की बड़ी बस्ती में कोई रसूल न भेज दे, वह उन पर हमारी आयात पढ़े, और हम बस्तियों को हलाक करने वाले नहीं जब तक उन के रहने वाले ज़ालिम (न) हों। (59)

النصف

وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ۚ وَمَا

और जो	और उस की ज़ीनत	दुनियां	ज़िन्दगी	सो सामान	कोई चीज़	और जो दी गई तुम्हें

عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٠﴾ اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ ع ٦ ١٠ ٩

हम ने वादा किया उस से	सो क्या जो	60	सो क्या तुम समझते नहीं?	बाक़ी रहने वाला-तादेर	बेहतर	अल्लाह के पास

وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ

वह	फिर	दुनिया की ज़िन्दगी	सामान	हम ने दिया उसे	उस की तरह जिसे	पाने वाला उस को	फिर वह	वादा अच्छा

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ﴿٦١﴾ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ

कहां	पस कहेगा वह	वह पुकारेगा उन्हें	और जिस दिन	61	हाज़िर किए जाने वाले	से	रोज़े क़ियामत

شُرَكَآءِىَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٦٢﴾ قَالَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ

उन पर	साबित हो गया	वह जो	कहेंगे	62	तुम गुमान करते थे	वह जिन्हें	मेरे शरीक

الْقَوْلُ رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَغْوَيْنَا ۚ اَغْوَيْنٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۚ تَبَرَّاْنَآ

हम बेज़ारी करते हैं	हम बहके	जैसे	हम ने बहकाया उन्हें	हम ने बहकाया	वह जिन्हें	यह हैं	ऐ हमारे रब	हुक्मे (अज़ाब)

اِلَيْكَ ۖ مَا كَانُوْٓا اِيَّانَا يَعْبُدُوْنَ ﴿٦٣﴾ وَقِيْلَ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ

अपने शरीकों को	तुम पुकारो	और कहा जाएगा	63	बन्दगी करते	सिर्फ़ हमारी	वह न थे	तेरी तरफ़ (सामने)

فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَرَاَوُا الْعَذَابَ ۚ لَوْ اَنَّهُمْ

काश वह	अज़ाब	और वह देखेंगे	उन्हें	तो वह जवाब न देंगे	सो वह उन्हें पुकारेंगे

كَانُوْا يَهْتَدُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اَجَبْتُمُ

तुम ने जवाब दिया	क्या	तो फ़रमाएगा	वह पुकारेगा उन्हें	और जिस दिन	64	वह हिदायत याफ़्ता होते

الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٦٥﴾ فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْاَنْۢبَآءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ

पस वह	उस दिन	ख़बरें (बातें)	उन को	पस न सूझेगी	65	पैग़म्बर (जमा)

لَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿٦٦﴾ فَاَمَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسٰٓى

तो उम्मीद है	और उस ने अमल किए अच्छे	और वह ईमान लाया	जिस ने तौबा की	सो-लेकिन	66	आपस में सवाल न करेंगे

اَنْ يَّكُوْنَ مِنَ الْمُفْلِحِيْنَ ﴿٦٧﴾ وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ ؕ

और वह पसंद करता है	जो वह चाहता है	पैदा करता है	और तुम्हारा रब	67	कामयाबी पाने वाले	से	कि वह हो

مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٨﴾ وَرَبُّكَ يَعْلَمُ

जानता है	और तुम्हारा रब	68	उस से जो वह शरीक करते हैं	और बरतर	अल्लाह पाक है	इख़्तियार	उन के लिए	नहीं है

مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَهُوَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ

उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	और वही अल्लाह	69	वह ज़ाहिर करते हैं	और जो	उन के सीने	छुपा है	जो

لَهُ الْحَمْدُ فِى الْاُوْلٰى وَالْاٰخِرَةِ ۫ وَلَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٧٠﴾

70	तुम लौट कर जाओगे	और उसी की तरफ़	और उसी के लिए फ़रमां रवाई	और आख़िरत	दुनिया में	उसी के लिए तमाम तारीफ़ें

और तुम्हें जो कोई चीज़ दी गई है सो वह (सिर्फ़) दुनिया की ज़िन्दगी का सामान और उस की ज़ीनत है, और जो अल्लाह के पास है वह बेहतर है और तादेर बाक़ी रहने वाला है, सो क्या तुम समझते नहीं? (60)

सो जिस से हम ने अच्छा वादा किया फिर वह उस को पाने वाला है, क्या वह उस शख़्स की तरह है जिसे हम ने दुनिया की ज़िन्दगी के सामान दिया, फिर वह रोज़े क़ियामत (गिरफ़्तार हो कर) हाज़िर किए जाने वालों में से हुआ। (61)

और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा, कहेगा कहां हैं? मेरे शरीक जिन्हें तुम (मेरा शरीक) गुमान करते थे। (62)

(फिर) कहेंगे वह जिन पर हुक्मे अज़ाब साबित हो गया कि ऐ हमारे रब! यह हैं वह जिन्हें हम ने बहकाया, हम ने उन्हें (वैसे ही) बहकाया जैसे हम (ख़ुद) बहके थे। हम तेरी तरफ़ (तेरे हुज़ूर सब से) बेज़ारी करते हैं, वह हमारी बन्दगी न करते थे। (63)

और कहा जाएगा तुम अपने शरीकों को पुकारो, सो वह उन्हें पुकारेंगे, तो वह उन्हें जवाब न देंगे, और वह अज़ाब देखेंगे, काश वह हिदायत याफ़्ता होते। (64)

और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा तो फ़रमाएगा तुम ने पैग़म्बरों को क्या जवाब दिया था? (65)

पस उन को कोई बात न सूझेगी उस दिन, पस वह आपस में (भी) सवाल न कर सकेंगे। (66)

सो जिस ने तौबा की और वह ईमान लाया और उस ने अच्छे अमल किए, तो उम्मीद है कि वह कामयाबी पाने वालों में से हो। (67)

और तुम्हारा रब पैदा करता है जो वह चाहता है और (जो) वह पसंद करता है, नहीं है उन के लिए (उन का कोई) इख़्तियार, अल्लाह उस से पाक है और बरतर है उस से जो वह शरीक करते हैं। (68)

और तुम्हारा रब जानता है जो उन के सीनों में छुपा है, और जो ज़ाहिर करते हैं। (69)

और वही है अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उसी के लिए हैं तमाम तारीफ़ें दुनिया में और आख़िरत में, और उसी के लिए है फ़रमांरवाई, और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (70)

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ الَّيْلَ سَرْمَدًا اِلٰى

तक	हमेशा	रात	तुम पर	कर दे (रखे) अल्लाह	अगर	भला तुम देखो तो	फ़रमा दें

يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِضِيَآءٍ ؕ اَفَلَا تَسْمَعُوْنَ ﴿٧١﴾

71	तो क्या तुम सुनते नहीं?	रोशनी	ले आए तुम्हारे पास	अल्लाह के सिवा	माबूद	कौन	रोज़े क़ियामत

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا اِلٰى

तक	हमेशा	दिन	तुम पर	बनाए (रखे) अल्लाह	अगर	भला तुम देखो तो	फ़रमा दें

يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُوْنَ فِيْهِ ؕ

उस में	तुम आराम करो	रात	ले आए तुम्हारे लिए	अल्लाह के सिवा	माबूद	कौन	रोज़े क़ियामत

اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَمِنْ رَّحْمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا

ताकि तुम आराम करो	और दिन	रात	उस ने तुम्हारे लिए बनाया	और अपनी रहमत से	72	तो क्या तुम्हें सूझता नहीं?

فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾ وَيَوْمَ

और जिस दिन	73	तुम शुक्र करो	और ताकि तुम	उस का फ़ज़्ल (रोज़ी)	और ताकि तुम तलाश करो	उस में

يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِىَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٧٤﴾

74	तुम गुमान करते थे	वह जो	मेरे शरीक	कहां?	तो वह कहेगा	वह पुकारेगा उन्हें

وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا فَقُلْنَا هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ

अपनी दलील	तुम लाओ (पेश करो)	फिर हम कहेंगे	एक गवाह	हर उम्मत	से	और हम निकाल कर लाएंगे

ع ١٥ ١٠ فَعَلِمُوْٓا اَنَّ الْحَقَّ لِلّٰهِ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٧٥﴾

75	जो वह घड़ते थे	उन से	और गुम हो जाएंगी	सच्ची बात अल्लाह की	कि	सो वह जान लेंगे

اِنَّ قَارُوْنَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوْسٰى فَبَغٰى عَلَيْهِمْ ۖ وَاٰتَيْنٰهُ

और हम ने दिए थे उस को	उन पर	सो उस ने ज़ियादती की	मूसा (अ) की क़ौम	से	था	क़ारून	बेशक

مِنَ الْكُنُوْزِ مَآ اِنَّ مَفَاتِحَهٗ لَتَنُوْٓاُ بِالْعُصْبَةِ اُولِى الْقُوَّةِ ۗ

ज़ोर आवर	एक जमाअ़त पर	भारी होतीं	उस की कुन्जियां	इतने कि	ख़ज़ानों से

اِذْ قَالَ لَهٗ قَوْمُهٗ لَا تَفْرَحْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِيْنَ ﴿٧٦﴾

76	ख़ुश होने (इतराने) वाले	पसंद नहीं करता	बेशक अल्लाह	न ख़ुश हो (न इतरा)	उस की क़ौम	उस को	जब कहा

وَابْتَغِ فِيْمَآ اٰتٰىكَ اللّٰهُ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ

अपना हिस्सा	और न भूल तू	आख़िरत का घर	तुझे दिया अल्लाह ने	उस से जो	और तलब कर

مِنَ الدُّنْيَا وَاَحْسِنْ كَمَآ اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ

और न चाह	तेरी तरफ़ (साथ)	अल्लाह ने एहसान किया	जैसे	और नेकी कर	दुनिया	से

الْفَسَادَ فِى الْاَرْضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٧٧﴾

77	फ़साद करने वाले	पसंद नहीं करता	बेशक अल्लाह	ज़मीन में	फ़साद

आप (स) फ़रमा दें भला देखो तो अगर अल्लाह रोज़े क़ियामत तक के लिए तुम पर हमेशा रात रखे तो अल्लाह के सिवा और कौन माबूद है? जो तुम्हारे लिए (दिन की) रोशनी ले आए, तो क्या तुम सुनते नहीं? (71)

आप (स) फ़रमा दें भला तुम देखो तो अगर अल्लाह तुम पर रखे रोज़े क़ियामत तक के लिए हमेशा दिन तो अल्लाह के सिवा और कौन माबूद है जो तुम्हारे लिए रात ले आए? कि तुम उस में आराम करो, तो क्या तुम्हें सूझता नहीं? (72)

और उस ने अपनी रहमत से तुम्हारे लिए रात और दिन को बनाया ताकि उस (रात) में आराम करो और (दिन में) रोज़ी तलाश करो, और ताकि तुम (अल्लाह का) शुक्र करो। (73)

और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा तो वह कहेगा कहां हैं वह? जिन को तुम मेरा शरीक गुमान करते थे। (74)

और हम हर उम्मत में से एक गवाह निकाल कर लाएंगे, फिर हम कहेंगे अपनी दलील पेश करो, सो वह जान लेंगे कि सच्ची बात अल्लाह की है, और गुम हो जाएंगी (वह सब बातें) जो वह घड़ते थे। (75)

बेशक क़ारून था मूसा (अ) की क़ौम से, सो उस ने उन पर ज़ियादती की, और हम ने उस को इतने ख़ज़ाने दिए थे कि उस की कुन्जियां एक ज़ोर आवर जमाअ़त पर (भी) भारी होतीं थीं, जब उस को उस की क़ौम ने कहा, इतरा नहीं बेशक अल्लाह पसंद नहीं करता इतराने वालों को। (76)

और जो तुझे अल्लाह ने दिया है उस से आख़िरत का घर तलब कर (आख़िरत की फ़िक्र कर) और अपना हिस्सा न भूल दुनिया से, और नेकी कर जैसे तेरे साथ अल्लाह ने नेकी की है, और तू फ़साद न चाह ज़मीन में, बेशक अल्लाह फ़साद करने वालों को पसंद नहीं करता। (77)

قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ عِنْدِيْ ؕ اَوَلَمْ يَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ

कि अल्लाह	वह जानता	क्या नहीं	मेरे पास	एक इल्म की वजह से	मुझे दिया गया है	यह तो	कहने लगा

قَدْ اَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهٖ مِنَ الْقُرُوْنِ مَنْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَّاَكْثَرُ

और ज़ियादा	कुव्वत में	उस से	वह ज़ियादा सख़्त	जो	जमाअ़तें	से (कितनी)	उस से क़ब्ल	बिला शुबाह हलाक कर दिया है

جَمْعًا ؕ وَلَا يُسْـَٔلُ عَنْ ذُنُوْبِهِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٧٨﴾ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ

अपनी क़ौम	पर (सामने)	फिर वह निकला	78	मुजरिम (जमा)	उन के गुनाह	से (बाबत)	और न सवाल किया जाएगा	जमियत

فِيْ زِيْنَتِهٖ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ

हमारे पास होता ऐसा	ऐ काश	दुनिया की ज़िन्दगी	चाहते थे (तालिब थे)	वह लोग जो	कहा	अपनी ज़ेब ओ ज़ीनत	में (साथ)

مَآ اُوْتِيَ قَارُوْنُ ۙ اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿٧٩﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ

वह लोग जिन्हें	और कहा	79	बड़ा	नसीब वाला	बेशक वह	क़ारून	जो दिया गया

اُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ

अच्छा	और उस ने अ़मल किया	ईमान लाया	उस के लिए जो	बेहतर	अल्लाह का सवाब	अफ़्सोस तुम पर	दिया गया था इल्म

وَلَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الصّٰبِرُوْنَ ﴿٨٠﴾ فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ الْاَرْضَ ۖ

ज़मीन	और उस के घर को	उस को	फिर हम ने धंसा दिया	80	सब्र करने वाले	सिवाए	और वह नसीब नहीं होता

فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ وَمَا كَانَ مِنَ

से	और न हुआ वह	अल्लाह के सिवा	मदद करती उस की	कोई जमाअ़त	उस के लिए	सो न हुई

الْمُنْتَصِرِيْنَ ﴿٨١﴾ وَاَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهٗ بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ

कहने लगे	कल	उस का मुक़ाम	तमन्ना करते थे	जो लोग	और सुबह के वक़्त	81	बदला लेने वाले

وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ ۚ

और तंग कर देता है	अपने बन्दे	से	जिस के लिए चाहे	रिज़्क़	फ़राख़ कर देता है	अल्लाह	हाए शामत

لَوْلَآ اَنْ مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ؕ وَيْكَاَنَّهٗ لَا يُفْلِحُ

फ़लाह नहीं पाते	हाए शामत	अलबत्ता हमें धंसा देता	हम पर	एहसान करता अल्लाह	यह कि	अगर न

الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٢﴾ تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ ع ٨ ١١

उन लोगों के लिए जो	हम करते हैं उसे	आख़िरत का घर	यह	82	काफ़िर (जमा)

لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٨٣﴾

83	परहेज़गारों के लिए	और अन्जाम (नेक)	और न फ़साद	ज़मीन में	बड़ाई	वह नहीं चाहते

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ

बुराई के साथ	आया	और जो	उस से बेहतर	तो उस के लिए	नेकी के साथ	जो आया

فَلَا يُجْزَى الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٨٤﴾

84	वह करते थे	जो	मगर-सिवा	उन्हों ने बुरे काम किए	उन लोगों को जिन्हों ने	तो बदला न मिलेगा

कहने लगा यह तो एक इल्म की वजह से मुझे दिया गया है जो मेरे पास है, क्या वह नहीं जानता? कि उस से क़ब्ल अल्लाह ने कितनी जमाअ़तों को हलाक कर दिया है, जो उस से ज़ियादा सख़्त थीं कुव्वत में, और ज़ियादा थीं जमियत में, उन के गुनाहों की बाबत सवाल न किया जाएगा मुजरिमों से। (78)

फिर वह (क़ारून) अपनी क़ौम के सामने ज़ेब ओ ज़ीनत के साथ निकला तो उन लोगों ने कहा जो तालिब थे दुनिया की ज़िन्दगी के, जो क़ारून को दिया गया है, ऐ काश ऐसा हमारे पास (भी) होता, बेशक वह बड़ा नसीब वाला है। (79)

और जिन लोगों को इल्म दिया गया था उन्हों ने कहा अफ़्सोस है तुम पर! अल्लाह का सवाब (अजर) बेहतर है उस के लिए जो ईमान लाया और उस ने अच्छा अ़मल किया और वह सब्र करने वालों के सिवा (किसी को) नसीब नहीं होता। (80)

फिर हम ने उस को और उस के घर को ज़मीन में धंसा दिया, सो उस के लिए कोई जमाअ़त न हुई जो अल्लाह के सिवा (अल्लाह से बचाने में) उस की मदद करती और न वह (ख़ुद) हुआ बदला लेने वालों में से। (81)

और कल तक जो लोग उस के मुक़ाम की तमन्ना करते थे, सुब्ह के वक़्त कहने लगे हाए शामत! अपने बन्दों में से अल्लाह जिस के लिए चाहे रिज़्क़ फ़राख़ कर देता है और (जिस के लिए चाहे) तंग कर देता है, अगर अल्लाह हम पर एहसान न करता तो अलबत्ता हमें (भी) धंसा देता, हाए शामत! काफ़िर फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) नहीं पाते। (82)

यह आख़िरत का घर है, हम उन लोगों के लिए तैयार करते हैं जो नहीं चाहते ज़मीन (मुल्क) में बड़ाई और न फ़साद, और नेक अन्जाम परहेज़गारों के लिए है। (83)

जो नेकी के साथ आया उस के लिए उस से बेहतर (सिला) है और जो बुराई के साथ आया, तो उन लोगों को जिन्हों ने बुरे अ़मल किए उस के सिवा बदला न मिलेगा जो वह करते थे। (84)

اِنَّ الَّذِیْ فَرَضَ عَلَیْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ اِلٰی مَعَادٍ ؕ

सब से अच्छी लौटने की जगह	ज़रूर फेर लाएगा तुम्हें	कुरआन	तुम पर	लाज़िम किया	वह (अल्लाह) जिस ने	बेशक

قُلْ رَّبِّیْۤ اَعْلَمُ مَنْ جَآءَ بِالْهُدٰی وَمَنْ هُوَ فِیْ

में	और वह कौन	हिदायत के साथ	आया	कौन	खूब जानता है	मेरा रब	फ़रमादें

ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۸۵﴾ وَمَا كُنْتَ تَرْجُوْۤا اَنْ یُّلْقٰۤی اِلَیْكَ الْكِتٰبُ

किताब	तुम्हारी तरफ़	कि उतारी जाएगी	उम्मीद रखते	और तुम न थे	85	खुली गुमराही

اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ ظَهِیْرًا لِّلْكٰفِرِیْنَ ﴿۸۶﴾ ز

86	काफ़िरों के लिए	मददगार	सो तुम हरगिज़ न होना	तुम्हारा रब	से	रहमत	मगर

وَلَا یَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰیٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ اِذْ اُنْزِلَتْ اِلَیْكَ

तुम्हारी तरफ़	नाज़िल किए गए	जबकि	बाद	अल्लाह के अहकाम	से	और वह तुम्हें हरगिज़ न रोकें

وَادْعُ اِلٰی رَبِّكَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۸۷﴾ ج وَلَا تَدْعُ

और न पुकारो तुम	87	मुश्‍रिकीन	से	और तुम हरगिज़ न होना	अपने रब की तरफ़	और आप बुलाएं

وقف لازم

مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۘ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۟ قف كُلُّ شَیْءٍ هَالِكٌ اِلَّا

सिवा	फ़ना होने वाली	हर चीज़	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	दूसरा	कोई माबूद	अल्लाह के सिवा

ع ۹ ٦ ١٢ الثلثة

وَجْهَهٗ ؕ لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۸۸﴾ ع

88	तुम लौट कर जाओगे	और उस की तरफ़	हुक्म	उसी के लिए-का	उस की ज़ात

آیَاتُهَا ٦٩ ❀ سُوْرَةُ الْعَنْكَبُوْتِ (٢٩) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٧

रुकुआत 7	(29) सूरतुल अन्कबूत मकड़ी	आयात 69

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓمّٓ ﴿۱﴾ ج اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ یُّتْرَكُوْۤا اَنْ یَّقُوْلُوْۤا اٰمَنَّا وَهُمْ

और वह	हम ईमान लाए	उन्हों ने कह दिया	कि	कि वह छोड़ दिए जाएंगे	लोग	क्या गुमान किया है	1	अलिफ़ लाम मीम

لَا یُفْتَنُوْنَ ﴿۲﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَیَعْلَمَنَّ اللّٰهُ

तो ज़रूर मालूम करेगा अल्लाह	उन से पहले	वह लोग जो	और अलबत्ता हम ने आज़माया	2	वह न आज़माए जाएंगे

الَّذِیْنَ صَدَقُوْا وَلَیَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِیْنَ ﴿۳﴾ اَمْ حَسِبَ الَّذِیْنَ

वह लोग जो	क्या गुमान किया है	3	झूटे	और वह ज़रूर मालूम करलेगा	सच्चे हैं	वह लोग जो

یَعْمَلُوْنَ السَّیِّاٰتِ اَنْ یَّسْبِقُوْنَا ؕ سَآءَ مَا یَحْكُمُوْنَ ﴿۴﴾ مَنْ

जो	4	जो वह फ़ैसला कर रहे हैं	बुरा है	वह हम से बाहर बच निकलेंगे	कि	बुरे काम	करते हैं

كَانَ یَرْجُوْا لِقَآءَ اللّٰهِ فَاِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ لَاٰتٍ ؕ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ﴿۵﴾

5	जानने वाला	सुनने वाला	और वह	ज़रूर आने वाला	अल्लाह का वादा	तो बेशक	अल्लाह से मुलाक़ात की	वह उम्मीद रखता है

बेशक जिस अल्लाह ने तुम पर कुरआन (पर अ़मल और तब्लीग़) को लाज़िम किया है वह तुम्हें ज़रूर सब से अच्छी लौटने की जगह फेर लाएगा, आप (स) फ़रमा दें मेरा रब खूब जानता है कि कौन हिदायत के साथ आया और कौन खुली गुमराही में है। (85) और तुम न थे उम्मीद रखते कि तुम्हारी तरफ़ किताब उतारी जाएगी, मगर तुम्हारे रब की रहमत से (नुज़ूल हुआ), सो तुम हरगिज़ हरगिज़ न होना काफ़िरों के लिए मददगार। (86) और वह तुम्हें हरगिज़ अल्लाह के अहकाम से न रोकें, उस के बाद जबकि नाज़िल किए गए तुम्हारी तरफ़, और आप (स) अपने रब की तरफ़ बुलाएं, और हरगिज़ मुश्‍रिकों में से न होना। (87) और अल्लाह के साथ न पुकारो कोई दूसरा माबूद, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उस की ज़ात के सिवा हर चीज़ फ़ना होने वाली है, उसी का हुक्म है और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (88)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-मीम। (1) क्या लोगों ने गुमान कर लिया है कि वह (इतने पर) छोड़ दिए जाएंगे कि उन्हों ने कह दिया कि हम ईमान ले आए हैं, और वह न आज़माए जाएंगे। (2) और अलबत्ता हम ने उन से पहले लोगों को आज़माया, तो अल्लाह ज़रूर मालूम कर लेगा उन लोगों को जो सच्चे हैं, और ज़रूर मालूम कर लेगा झूटों को। (3) जो लोग बुरे काम करते हैं क्या उन्हों ने गुमान किया है कि वह हम से बाहर बच निकलेंगे? बुरा है जो वह फ़ैसला (ख़याल) कर रहे हैं। (4) जो कोई अल्लाह से मुलाक़ात (मिलने) की उम्मीद रखता है तो बेशक अल्लाह का वादा ज़रूर आने वाला है और वह सुनने वाला, जानने वाला। (5)

وَمَنْ جٰهَدَ فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ عَنِ

से	अलबत्ता बेनियाज़	बेशक अल्लाह	अपनी ज़ात के लिए	कोशिश करता है वह	तो सिर्फ़	कोशिश करता है	और जो

الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُكَفِّرَنَّ

अलबत्ता हम ज़रूर दूर कर देंगे	और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए	ईमान लाए	और जो लोग	6	जहान वाले

عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَحْسَنَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٧﴾

7	वह करते थे	वह जो	ज़ियादा बेहतर	और हम ज़रूर जज़ा देंगे उन्हें	उन की बुराइयां	उन से

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ؕ وَاِنْ جٰهَدٰكَ

तुझ से कोशिश करें	और अगर	हुस्ने सुलूक का	माँ बाप से	इन्सान	और हम ने हुक्म दिया

لِتُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ؕ

तो कहा न मान उन का	उस का कोई इल्म	तुझे	जिस का नहीं	कि तू शरीक ठहराए मेरा

اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٨﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

वह ईमान लाए	और जो लोग	8	तुम करते थे	वह जो	तो मैं ज़रूर बतलाऊँगा तुम्हें	मेरी तरफ़ तुम्हें लौट कर आना

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصّٰلِحِيْنَ ﴿٩﴾ وَمِنَ

और से-कुछ	9	नेक बन्दों में	हम उन्हें ज़रूर दाख़िल करेंगे	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए

النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَآ اُوْذِيَ فِي اللّٰهِ جَعَلَ

बना लिया	अल्लाह की (राह) में	सताए गए	फिर जब	अल्लाह पर	हम ईमान लाए	जो कहते हैं	लोग

فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللّٰهِ ؕ وَلَئِنْ جَآءَ نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ

तुम्हारे रब से	कोई मदद	आए	और अगर	जैसे अ़ज़ाब अल्लाह का	लोग	सताना

لَيَقُوْلُنَّ اِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ؕ اَوَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِيْ صُدُوْرِ

सीनों (दिल) में	वह जो	ख़ूब जानने वाला	क्या नहीं है अल्लाह	तुम्हारे साथ	बेशक हम थे	तो वह ज़रूर कहते हैं

الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠﴾ وَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ

और अलबत्ता ज़रूर मालूम करेगा	ईमान लाए	वह लोग जो	और अलबत्ता ज़रूर मालूम करेगा अल्लाह	10	जहान वाले

الْمُنٰفِقِيْنَ ﴿١١﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبِعُوْا

तुम चलो	उन लोगों को जो ईमान लाए	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहा	11	मुनाफ़िक़ (जमा)

سَبِيْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰيٰكُمْ ؕ وَمَا هُمْ بِحٰمِلِيْنَ مِنْ خَطٰيٰهُمْ

उन के गुनाह	से	उठाने वाले	हालांकि वह नहीं	तुम्हारे गुनाह	और हम उठा लेंगे	हमारी राह

مِّنْ شَيْءٍ ؕ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٢﴾ وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ

साथ	और बहुत से बोझ	अपने बोझ	और वह अलबत्ता ज़रूर उठायेंगे	12	अलबत्ता झूटे	बेशक वह	कुछ

اَثْقَالِهِمْ ۫ وَلَيُسْـَٔلُنَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَمَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣﴾ ع ١٣ ١٣

13	वह झूट घड़ते थे	उस से जो	क़ियामत के दिन	और अलबत्ता उन से ज़रूर बाज़ पुर्स होगी	अपने बोझ

और जो कोई कोशिश करता है तो सिर्फ़ अपनी ज़ात के लिए कोशिश करता है। बेशक अल्लाह अलबत्ता जहान वालों से बेनियाज़ है। (6)
और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए अलबत्ता हम ज़रूर उन से उन की बुराइयां दूर कर देंगे, और हम ज़रूर उन्हें (उन के आमाल की) ज़ियादा बेहतर जज़ा देंगे जो वह करते थे। (7)
और हम ने इन्सान को माँ बाप से हुस्ने सुलूक का हुक्म दिया है, और अगर वह तुझ से कोशिश करें (ज़ोर डालें) कि तू (किसी को) मेरा शरीक ठहराए जिस का तुझे कोई इल्म नहीं, तो उन का कहा न मान, तुम्हें मेरी तरफ़ लौट कर आना है, तो मैं तुम्हें ज़रूर बतलाऊँगा वह जो तुम करते थे। (8)
और जो लोग ईमान लाए, और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, हम उन्हें ज़रूर नेक बन्दों में दाख़िल करेंगे। (9)
और कुछ लोग कहते हैं, हम अल्लाह पर ईमान लाए, फिर जब अल्लाह की राह में सताए गए तो उन्हों ने लोगों के सताने को बना लिया (समझ लिया) जैसे अल्लाह का अ़ज़ाब हो, और अगर तुम्हारे रब की तरफ़ से कोई मदद आए तो (उस वक़्त) वह ज़रूर कहते हैं बेशक हम तुम्हारे साथ हैं, क्या अल्लाह ख़ूब जानने वाला नहीं जो दुनिया जहान वालों के दिल में है। (10)
और अल्लाह ज़रूर मालूम करेगा उन लोगों को जो ईमान लाए और ज़रूर मालूम करेगा मुनाफ़िक़ों को। (11)
और काफ़िरों ने ईमान लाने वालों को कहाः तुम हमारी राह चलो, और हम तुम्हारे गुनाह उठा लेंगे, हालांकि वह उन के गुनाह उठाने वाले नहीं कुछ भी, बेशक वह झूटे हैं। (12)
और वह अलबत्ता ज़रूर अपने बोझ उठायेंगे और बहुत से बोझ अपने बोझ के साथ, और क़ियामत के दिन अलबत्ता उन से ज़रूर उस (के बारे में) बाज़ पुर्स होगी जो वह झूट घड़ते थे। (13)

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ فِيْهِمْ اَلْفَ سَنَةٍ

हज़ार साल	उन में	तो वह रहे	उस की क़ौम की तरफ़	नूह (अ) को	और बेशक हम ने भेजा

اِلَّا خَمْسِيْنَ عَامًا ؕ فَاَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١٤﴾

14	ज़ालिम थे	और वह	तूफ़ान	फिर उन्हें आ पकड़ा	साल	पचास	मगर कम

فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَجَعَلْنٰهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٥﴾

15	जहान वालों के लिए	एक निशानी	और उसे बनाया	और कश्ती वालों को	फिर हम ने उसे बचा लिया

وَاِبْرٰهِيْمَ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ ؕ ذٰلِكُمْ

यह	और उस से डरो	तुम इबादत करो अल्लाह की	अपनी क़ौम को	जब उस ने कहा	और इब्राहीम (अ)

خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٦﴾ اِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ

से	तुम परस्तिश करते हो	इस के सिवा नहीं	16	तुम जानते हो	अगर	बेहतर तुम्हारे लिए

دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا وَّتَخْلُقُوْنَ اِفْكًا ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ

परस्तिश करते हो	वह जिन की तुम	बेशक	झूट	और तुम घड़ते हो	बुतों की	अल्लाह के सिवा

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوْا

पस तुम तलाश करो	रिज़्क़ के	तुम्हारे लिए	वह मालिक नहीं	अल्लाह के सिवा

عِنْدَ اللّٰهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوْهُ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ؕ اِلَيْهِ

उस की तरफ़	उस का	और शुक्र करो	और उस की इबादत करो	रिज़्क़	अल्लाह के पास

تُرْجَعُوْنَ ﴿١٧﴾ وَاِنْ تُكَذِّبُوْا فَقَدْ كَذَّبَ اُمَمٌ

बहुत सी उम्मतें	तो झुटला चुकी हैं	तुम झुटलाओगे	और अगर	17	तुम्हें लौट कर जाना है

مِّنْ قَبْلِكُمْ ؕ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٨﴾

18	साफ़ तौर पर	पहुँचा देना	मगर	रसूल	पर (ज़िम्मे)	और नहीं	तुम से पहली

اَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللّٰهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ

फिर दोबारा पैदा करेगा उस को	पैदाइश	इब्तिदा करता है अल्लाह	कैसे	देखा उन्हों ने	क्या नहीं

اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿١٩﴾ قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ

ज़मीन में	चलो फिरो	फ़रमा दें	19	आसान	अल्लाह पर	यह	बेशक

فَانْظُرُوْا كَيْفَ بَدَاَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللّٰهُ يُنْشِئُ

उठाएगा	अल्लाह	फिर	पैदाइश	कैसे इब्तिदा की	फिर देखो तुम

النَّشْاَةَ الْاٰخِرَةَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۚ ﴿٢٠﴾

20	क़ुदरत रखने वाला	हर शै	पर	बेशक अल्लाह	आख़री (दूसरी)	उठान

يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاِلَيْهِ تُقْلَبُوْنَ ﴿٢١﴾

21	तुम लौटाए जाओगे	और उसी की तरफ़	जिस पर चाहे	और रहम फ़रमाता है	जिस को चाहे	वह अ़ज़ाब देता है

बेशक हम ने नूह (अ) को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा, तो वह उन में पचास साल कम हज़ार बरस रहे, फिर उन्हें (क़ौमे नूह अ को) तूफ़ान ने आ पकड़ा, और वह ज़ालिम थे। (14)

फिर हम ने उसे और कश्ती वालों को बचा लिया और उस (कश्ती) को जहान वालों के लिए एक निशानी बनाया। (15)

और याद करो जब इब्राहीम (अ) ने अपनी क़ौम को कहा तुम अल्लाह की इबादत करो और उस से डरो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो। (16)

इस के सिवा नहीं कि तुम परस्तिश करते हो अल्लाह के सिवा बुतों की, और तुम झूट घड़ते हो, बेशक अल्लाह के सिवा तुम जिन की परस्तिश करते हो वह तुम्हारे लिए रिज़्क़ के मालिक नहीं, पस तुम अल्लाह के पास (से) रिज़्क़ तलाश करो, और तुम उस की इबादत करो और उस का शुक्र करो, और उसी की तरफ़ तुम को लौट कर जाना है। (17)

और अगर तुम झुटलाओगे तो झुटला चुकी हैं बहुत सी उम्मतें तुम से पहली (भी), और रसूल (स) के ज़िम्मे नहीं मगर साफ़ तौर पर पहुँचा देना। (18)

क्या उन्हों ने नहीं देखा कैसे अल्लाह पैदाइश की इब्तिदा करता है! फिर दोबारा उस को पैदा करेगा, बेशक अल्लाह पर यह आसान है। (19)

आप (स) फ़रमा दें (दुनिया में) चलो फिरो, फिर देखो उस ने कैसी पैदाइश की इब्तिदा की फिर अल्लाह उठाएगा दूसरी उठान (दूसरी बार), बेशक अल्लाह हर शै पर क़ुदरत रखने वाला है। (20)

वह जिस को चाहे अ़ज़ाब देता है और जिस पर चाहे रहम फ़रमाता है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (21)

وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ ۫ وَمَا

और नहीं	आस्मान में	और न	ज़मीन में	आजिज़ करने वाले	और न हो तुम

لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٢٢﴾ وَالَّذِيْنَ ع ٢ ٩ ١٤

और वह लोग जिन्हों ने	22	कोई मददगार	और न	कोई हिमायती	अल्लाह के सिवा	तुम्हारे लिए

كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَلِقَآئِهٖٓ اُولٰٓئِكَ يَئِسُوْا مِنْ رَّحْمَتِىْ

मेरी रहमत से	वह नाउम्मीद हुए	यही हैं	और उस की मुलाक़ात	अल्लाह की निशानियों का	इन्कार किया

وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٣﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ

उस की क़ौम	जवाब	सो न था	23	दर्दनाक	अज़ाब	उन के लिए	और यही हैं

اِلَّآ اَنْ قَالُوا اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ ؕ

आग से	सो बचा लिया उस को अल्लाह	जला दो उस को	या	क़त्ल करो उस को	उन्हों ने कहा	सिवाए यह कि

اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَقَالَ اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ

तुम ने बना लिए	और (इब्राहीम अ ने) कहा इस के सिवा नहीं	24	जो ईमान रखते हैं	उन लोगों के लिए	निशानियां हैं	इस में	बेशक

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا ۙ مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ

दुनिया की ज़िन्दगी में	अपने दरमियान (आपस में)	दोस्ती	बुत (जमा)	अल्लाह के सिवा

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ

बाज़ (दूसरे) का	तुम में से बाज़ (एक)	काफ़िर (मुख़ालिफ़) हो जाएगा	क़ियामत के दिन	फिर

وَّيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۫ وَّمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ

और नहीं तुम्हारे लिए	जहन्नम	और तुम्हारा ठिकाना	बाज़ (दूसरे) का	तुम में से बाज़ (एक)	और लानत करेगा

مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ وَقَالَ اِنِّىْ مُهَاجِرٌ وقف لازم

हिज्रत करने वाला	बेशक मैं	और उस ने कहा	लूत (अ)	उस पर	पस ईमान लाया	25	कोई मददगार

اِلٰى رَبِّىْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٦﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ

इस्हाक़ (अ)	उस को	और हम ने अता फ़रमाए	26	हिक्मत वाला	ज़बरदस्त ग़ालिब	वह	बेशक वह	अपने रब की तरफ़

وَيَعْقُوْبَ وَجَعَلْنَا فِىْ ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ

और किताब	नुबुव्वत	उस की औलाद में	और हम ने रखी	और याकूब (अ)

وَاٰتَيْنٰهُ اَجْرَهٗ فِى الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ

आख़िरत में	और बेशक वह	दुनिया में	उस का अजर	और हम ने दिया उस को

لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾ وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ

तुम करते हो	बेशक तुम	अपनी क़ौम को	(याद करो) जब उस ने कहा	और लूत (अ)	27	अलबत्ता नेकोकारों में से

الْفَاحِشَةَ ۡ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٨﴾

28	जहान वाले	से	किसी ने	उस को	नहीं पहले किया तुम से	बेहयाई

और तुम ज़मीन में आजिज़ करने वाले नहीं और न आस्मान में, और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई हिमायती है और न कोई मददगार। (22)

और जिन लोगों ने अल्लाह की निशानियों का और उस की मुलाक़ात का इन्कार किया यही लोग मेरी रहमत से नाउम्मीद हुए, और यही हैं जिन के लिए अज़ाब है दर्दनाक। (23)

सो उस की क़ौम का जवाब इस के सिवा न था कि उसे क़त्ल कर डालो या उस को जला दो, सो अल्लाह ने उस को आग से बचा लिया। बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ईमान रखते हैं। (24)

और इब्राहीम (अ) ने कहाः बेशक तुम ने अल्लाह के सिवा बुतों को दुनिया की ज़िन्दगी में आपस की दोस्ती (की वजह) बना लिए हो, फिर क़ियामत के दिन तुम में से एक दूसरे का मुक़ालिफ़ हो जाएगा और तुम में से एक दूसरे पर लानत (मलामत) करेगा, और तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है, और तुम्हारे लिए कोई मददगार नहीं। (25)

पस उस पर लूत (अ) ईमान लाया और उस ने कहा बेशक मैं अपने रब की तरफ़ हिज्रत करने वाला (वतन छोड़ने वाला हूँ), बेशक वही ग़ालिब हिक्मत वाला है। (26)

और हम ने उस (इब्राहीम अ) को अता फ़रमाए इस्हाक़ (अ) और याकूब (अ) और हम ने उस की औलाद में नुबुव्वत और किताब रखी, और हम ने उस को उस का अजर दिया दुनिया में और बेशक वह आख़िरत में अलबत्ता नेकोकारों में से है। (27)

और (हम ने भेजा) लूत (अ) को, याद करो जब उस ने कहा अपनी क़ौम को, बेशक तुम बेहयाई का (ऐसा काम) करते हो जो तुम से पहले जहान वालों में से किसी ने नहीं किया। (28)

اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُوْنَ السَّبِيْلَ ۙ وَتَاْتُوْنَ

और तुम करते हो	राह	और मारते हो	मर्द (जमा)	अलबत्ता तुम करते हो	क्या तुम वाक़ई

فِيْ نَادِيْكُمُ الْمُنْكَرَ ۭ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوا

उन्हों ने कहा	कि	सिवाए	उस की क़ौम का जवाब	सो न था	नाशाइस्ता हरकात	अपनी महफ़िलों में

ائْتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٩﴾ قَالَ رَبِّ

ऐ मेरे रब	कहा	29	सच्चे लोग	से	अगर तू है	अल्लाह का अ़ज़ाब	ले आ हम पर

ع ٣ ٨ ١٥

انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٣٠﴾ وَلَمَّا جَاۗءَتْ رُسُلُنَآ

हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते)	आए	और जब	30	मुफ़्सिद (जमा)	क़ौम-लोग	पर	मेरी मदद फ़रमा

اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى ۙ قَالُوْٓا اِنَّا مُهْلِكُوْٓا اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ ۚ

उस बस्ती	लोग	हलाक करने वाले	बेशक हम	उन्हों ने कहा	ख़ुशख़बरी ले कर	इब्राहीम (अ)

اِنَّ اَهْلَهَا كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَ اِنَّ فِيْهَا

बेशक उस में	इब्राहीम (अ) ने कहा	31	ज़ालिम (बड़े शरीर) हैं	उस के लोग	बेशक

لُوْطًا ۭ قَالُوْا نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَنْ فِيْهَا ۡ لَنُنَجِّيَنَّهٗ وَاَهْلَهٗٓ

और उस के घर वाले	अलबत्ता हम बचा लेंगे उस को	उस को जो उस में	ख़ूब जानते हैं	हम	वह बोले	लूत (अ)

اِلَّا امْرَاَتَهٗ ڭ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَلَمَّآ اَنْ جَاۗءَتْ

आए	कि	और जब	32	पीछे रह जाने वाले	से	वह है	उस की बीवी	सिवा

رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْۗءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالُوْا

और वह बोले	दिल में	उन से	और तंग हुआ	उन से	परेशान हुआ	लूत (अ) के पास	हमारे फ़रिश्ते

لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ ۣ اِنَّا مُنَجُّوْكَ وَاَهْلَكَ اِلَّا

सिवा	और तेरे घर वाले	बेशक हम बचाने वाले हैं तुझे	और न ग़म खाओ	डरो नहीं तुम

امْرَاَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٣﴾ اِنَّا مُنْزِلُوْنَ عَلٰٓي اَهْلِ

लोग	पर	नाज़िल करने वाले	बेशक हम	33	पीछे रह जाने वाले	से	वह है	तेरी बीवी

هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَاۗءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٣٤﴾

34	वह बदकारी करते थे	इस वजह से कि	आस्मान से	अ़ज़ाब	इस बस्ती

وَلَقَدْ تَّرَكْنَا مِنْهَآ اٰيَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَاِلٰى مَدْيَنَ

और मदयन की तरफ़	35	वह अ़क़्ल रखते हैं	लोगों के लिए	कुछ वाज़ेह निशानी	उस से	और अलबत्ता हम ने छोड़ा

اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۙ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَارْجُوا

और उम्मीद वार रहो	तुम इबादत करो अल्लाह की	ऐ मेरी क़ौम	पस उस ने कहा	शुऐब (अ) को	उन का भाई

الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٣٦﴾

36	फ़साद करते हुए (मचाते)	ज़मीन में	और न फिरो	आख़िरत का दिन

क्या तुम वाक़ई मर्दों से (फ़ेले बद) करते हो, और राह मारते (डाके डालते) हो, और तुम अपनी महफ़िलों में करते हो नाशायस्ता हरकात, सो उस की क़ौम का जवाब इस के सिवा न था कि उन्हों ने कहा हम पर अल्लाह का अ़ज़ाब ले आ, अगर तू है सच्चे लोगों में से। **(29)**

लूत (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! मुफ़्सिद लोगों पर मेरी मदद फ़रमा। **(30)**

और जब आए हमारे फ़रिश्ते इब्राहीम (अ) के पास ख़ुशख़बरी ले कर, उन्हों ने कहा बेशक हम उस बस्ती के लोगों को हलाक करने वाले हैं, बेशक उस (बस्ती) के लोग बड़े शरीर हैं। **(31)**

इब्राहीम (अ) ने कहा बेशक उस (बस्ती) में लूत (अ) (भी है), वह (फ़रिश्ते) बोले हम ख़ूब जानते हैं उस को जो उस (बस्ती) में हैं, अलबत्ता हम उस को और उस के घर वालों को ज़रूर बचा लेंगे सिवाए उस की बीवी, वह पीछे रह जाने वालों में से है। **(32)**

और जब हमारे फ़रिश्ते लूत (अ) के पास आए वह उन (के आने) से परेशान हुआ, उन की वजह से दिल तंग हुआ, और वह बोले डरो नहीं और ग़म न खाओ, बेशक हम तुझे और तेरे घर वालों को बचाने वाले हैं सिवाए तेरी बीवी के, वह पीछे रह जाने वालों में से है। **(33)**

बेशक हम इस बस्ती के लोगों पर आस्मान से अ़ज़ाब नाज़िल करने वाले हैं, इस वजह से कि वह बदकारी करते थे। **(34)**

और अलबत्ता हम ने उस (बस्ती) से कुछ वाज़ेह निशान उन लोगों के लिए छोड़े (बाक़ी रखे) जो अ़क़्ल रखते हैं। **(35)**

और मदयन (वालों) की तरफ़ उन के भाई शुऐब (अ) को भेजा पस उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो और आख़िरत के दिन के उम्मीद वार रहो, और ज़मीन में फ़साद मचाते न फिरो। **(36)**

فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ

अपने घर में	पस वह सुबह को हो गए	ज़ल्ज़ला	तो आ पकड़ा उन्हें	फिर उन्हों ने झुटलाया उस को

جٰثِمِيْنَ ﴿٣٧﴾ وَعَادًا وَّثَمُوْدَا۠ وَقَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ ۫

उन के रहने के मुक़ामात	तुम पर	वाज़ेह हो गए हैं	और तहक़ीक़	और समूद	और आ़द	37	औन्धे पड़े हुए

وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ

राह	से	फिर रोक दिया उन्हें	उन के आमाल	शैतान	उन के लिए	और भले कर दिखाए

وَكَانُوْا مُسْتَبْصِرِيْنَ ﴿٣٨﴾ۙ وَقَارُوْنَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ ۫ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ

और अलबत्ता आए उन के पास	और हामान	और फ़िरऔन	और क़ारून	38	समझ बूझ वाले	हालांकि वह थे

مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ فَاسْتَكْبَرُوْا فِي الْاَرْضِ وَمَا كَانُوْا

और वह न थे	ज़मीन (मुल्क) में	तो उन्हों ने तकब्बुर किया	खुली निशानियों के साथ	मूसा (अ)

سٰبِقِيْنَ ﴿٣٩﴾ۚ فَكُلًّا اَخَذْنَا بِذَنْۢبِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِ

उस पर	हम ने भेजी	जो	तो उन में से	उस के गुनाह पर	हम ने पकड़ा	पस हर एक	39	बच कर भाग निकलने वाले

حَاصِبًا ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا

हम ने धंसा दिया	जो	और उन में से	चिंघाड़	उस को पकड़ा	जो (बाज़)	और उन में से	पत्थरों की बारिश

بِهِ الْاَرْضَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ

ज़ुल्म करता उन पर	अल्लाह	और नहीं है	जो हम ने ग़र्क़ कर दिया	और उन में से	ज़मीन में	उस को

وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٠﴾ مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا

बनाए	वह लोग जिन्हों ने	मिसाल	40	ज़ुल्म करते	खुद अपनी जानों पर	वह थे	और लेकिन (बल्कि)

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ ۚ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا ؕ

एक घर	उस ने बनाया	मकड़ी	मानिंद	मददगार	अल्लाह के सिवा

وَاِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾

وقف لازم

41	जानते	काश होते वह	मकड़ी का	घर है	घरों में	सब से कमज़ोर	और बेशक

اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ؕ وَهُوَ

और वह	कोई चीज़	उस के सिवा	से	जो वह पुकारते हैं	जानता है	बेशक अल्लाह

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٤٢﴾ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ

लोगों के लिए	हम बयान करते हैं	मिसालें	और यह	42	हिक्मत वाला	ग़ालिब ज़बरदस्त

وَمَا يَعْقِلُهَآ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾ خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ

आस्मान (जमा)	पैदा किए अल्लाह ने	43	जानने वाले	सिवा	और नहीं समझते उन्हें

وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٤﴾ ع ١٤ ٤ ١٦

44	ईमान वालों के लिए	अलबत्ता निशानी	उस में	बेशक	हक़ के साथ	और ज़मीन

फिर उन्हों ने उस को झुटलाया तो उन को आ पकड़ा ज़ल्ज़ले ने, पस वह सुब्ह को अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। (37)

और (हम ने हलाक किया) आ़द और समूद को, और तहक़ीक़ तुम पर उन के रहने के मुक़ामात वाज़ेह हो गए हैं, और शैतान ने उन के आमाल उन के लिए (उन्हें) भले कर दिखाए फिर उस ने उन्हें राहे (हक़) से रोक दिया, हालांकि वह समझ बूझ वाले थे। (38)

और (हम ने हलाक किया) क़ारून और फ़िरऔन, और हामान को, और उन के पास मूसा (अ) खुली निशानियों के साथ आए तो उन्हों ने तकब्बुर किया मुल्क में और वह बच कर भाग निकलने वाले न थे। (39)

पस हम ने हर एक को उस के गुनाह पर पकड़ा तो उन में से (बाज़ वह हैं) जिन पर हम ने पत्थरों की बारिश भेजी, और उन में से बाज़ को चिंघाड़ ने आ पकड़ा, और उन में से बाज़ को हम ने ज़मीन में धंसा दिया, और उन में से बाज़ को हम ने ग़र्क़ कर दिया, और अल्लाह (ऐसा) नहीं कि उन पर ज़ुल्म करता बल्कि वह खुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। (40)

उन लोगों की मिसाल जिन्हों ने बनाए अल्लाह के सिवा मददगार, मकड़ी की मानिंद है, उस ने एक घर बनाया, और घरों में सब से कमज़ोर (बोदा) घर मकड़ी का है, काश वह जानते होते। (41)

बेशक अल्लाह जानता है जो वह पुकारते हैं उस के सिवा जिस चीज़ को भी, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला। (42)

और यह मिसालें हम बयान करते हैं, लोगों के लिए, और उन्हें नहीं समझते जानने वालों के सिवा। (43)

और अल्लाह ने आस्मान और ज़मीन को पैदा किया हक़ के साथ, बेशक उस में ईमान वालों के लिए निशानी है। (44)